सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
YouTube

Title Code : DELHIN28985.
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

वर्ष 01, अंक 231, नई दिल्ली

गुरुवार, 02 नवम्बर 2023, मूल्य ₹ 5, पेज 8

आज का सुविचार

यदि आप एक सुखी जीवन जीना चाहते हैं, तो इसे एक लक्ष्य से बांधें न कि लोगों या चीजों से !

दिल्ली में डीजल बसों पर नकेल, हरियाणा से सिर्फ इलेक्ट्रिक, सीएनजी, बीएस-6 बसों को आने की इजाजत

संजय बाटला

दिल्ली सरकार ने निर्देश दिया है कि हरियाणा से राष्ट्रीय राजधानी आने वाली सभी बसों को इलेक्ट्रिक, सीएनजी या बीएस6 डीजल से चलना होगा। जबकि उत्तर प्रदेश और राजस्थान के एनसीआर क्षेत्रों से आने वाली बसों को शहर के भीतर आते समय इन मानदंडों का पालन बुधवार से करना होगा।

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार ने निर्देश दिया है कि हरियाणा से राष्ट्रीय राजधानी आने वाली सभी बसों को इलेक्ट्रिक, सीएनजी या बीएस6 डीजल से चलना होगा। जबकि उत्तर प्रदेश और राजस्थान के एनसीआर क्षेत्रों से आने वाली बसों को शहर के भीतर आते समय इन मानदंडों का पालन बुधवार से करना होगा।

शहर सरकार के परिवहन विभाग ने कहा कि अगले साल 1 जुलाई से, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के किसी भी शहर या कस्बे से दिल्ली आने वाली सभी बसें सिर्फ इलेक्ट्रिक, सीएनजी और बीएस 6 डीजल वाली होंगी। वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने कहा था कि 1 नवंबर से दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में आने वाले हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के शहरों और कस्बों के बीच सिर्फ इलेक्ट्रिक, सीएनजी और बीएस 6-अनुरूप डीजल बसों को संचालित करने की अनुमति दी जाएगी।

इस उपाय का मकसद क्षेत्र में चलने वाली डीजल बसों के कारण होने वाले वायु प्रदूषण से निपटना है। जिसका अंतिम लक्ष्य इलेक्ट्रिक वाहनों में परिवर्तन करना है। हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान को जारी एक सर्कुलर (परिपत्र) में, परिवहन विभाग ने बसों के लिए दिशानिर्देश साझा किए जो बुधवार से लागू होंगे।

सर्कुलर में कहा गया है, ₹हरियाणा और दिल्ली राज्य के किसी भी शहर/कस्बे के बीच सभी राज्य सरकार की बस सेवाएं 01.11.2023 से सिर्फ ईवी/सीएनजी/बीएस6 डीजल बसों के जरिए संचालित की जाएंगी। यह राज्य सार्वजनिक उपक्रमों और निजी संस्थाएं आदि द्वारा संचालित बस सेवाओं के लिए भी लागू होगा।

सर्कुलर में राजस्थान से आने वाली बसों के लिए दिशानिर्देश बताते हुए कहा गया है कि राजस्थान और दिल्ली के साथ-साथ एनसीआर के किसी भी अन्य शहर या कस्बे के लिए ₹किसी भी एनसीआर शहर/कस्बे के बीच सभी बस सेवाएं इलेक्ट्रिक, सीएनजी या बीएस 6 डीजल वाली होंगी।

इसमें कहा गया है, ₹राजस्थान के गैर-एनसीआर क्षेत्रों से दिल्ली तक सभी बस सेवाएं भी 01.01.2024 से ईवी/सीएनजी/बीएस6 डीजल बसों के जरिए सुनिश्चित की जाएंगी। यह राज्य सार्वजनिक उपक्रमों और निजी संस्थाओं आदि द्वारा संचालित की जा रही बस सेवाओं पर भी लागू होगी।₹

उत्तर प्रदेश के लिए भी इसी तरह के दिशानिर्देश तय किए गए।

उत्तर प्रदेश राज्य के किसी भी एनसीआर शहर/कस्बे और दिल्ली के बीच सभी बस सेवाएं 01.11.2023 से सिर्फ ईवी/सीएनजी/बीएस6 डीजल बसों के जरिए संचालित की जाएंगी। यह राज्य सार्वजनिक उपक्रमों और निजी द्वारा संचालित बस सेवाओं के लिए भी लागू होगी।

इसमें कहा गया, ₹राज्य के गैर-एनसीआर क्षेत्रों से दिल्ली और अन्य राज्यों के एनसीआर क्षेत्रों के बीच चलने वाली सभी 1,433 राज्य सरकार की बसों को भी 01.07.2024 से बीएस 6 डीजल अनुपालन बसों के माध्यम से सुनिश्चित किया जाएगा। यह राज्य सार्वजनिक उपक्रमों और निजी संस्थाएं आदि द्वारा संचालित बस सेवाओं के लिए भी लागू होगा।

सर्कुलर में कहा गया है कि इसका पालन नहीं करने पर और किसी भी विचलन को मोटर वाहन अधिनियम, 1988 में निर्धारित विभिन्न प्रावधानों का उल्लंघन माना जाएगा और अधिनियम के तहत कार्रवाई भी की जा सकती है।

भारत स्टेज उत्सर्जन मानक कार्बन मोनोऑक्साइड और पार्टिकुलेट मैटर जैसे वायु प्रदूषकों की मात्रा पर कानूनी सीमा निर्धारित करते हैं, जो वाहन भारत में उत्सर्जित कर सकते हैं। ये मानक उत्सर्जन नियंत्रण, ईंधन दक्षता और इंजन डिजाइन में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हैं। चूंकि वाहन निर्माता इन नए मानदंडों को पूरा करने वाले वाहन प्रदान करते हैं, तेल कंपनियां बीएस-VI मानकों का पालन करने वाले ईंधन की आपूर्ति करती हैं। जिसे दुनिया के सबसे स्वच्छ ईंधन के रूप में जाना जाता है।

विभाग ने विभिन्न चेक पॉइन्ट पर 18 प्रवर्तन टीमों को तैनात किया है। ताकि यह जांच की जा सके कि राजधानी में आने वाली बसें मानदंडों का पालन कर रही हैं या नहीं।

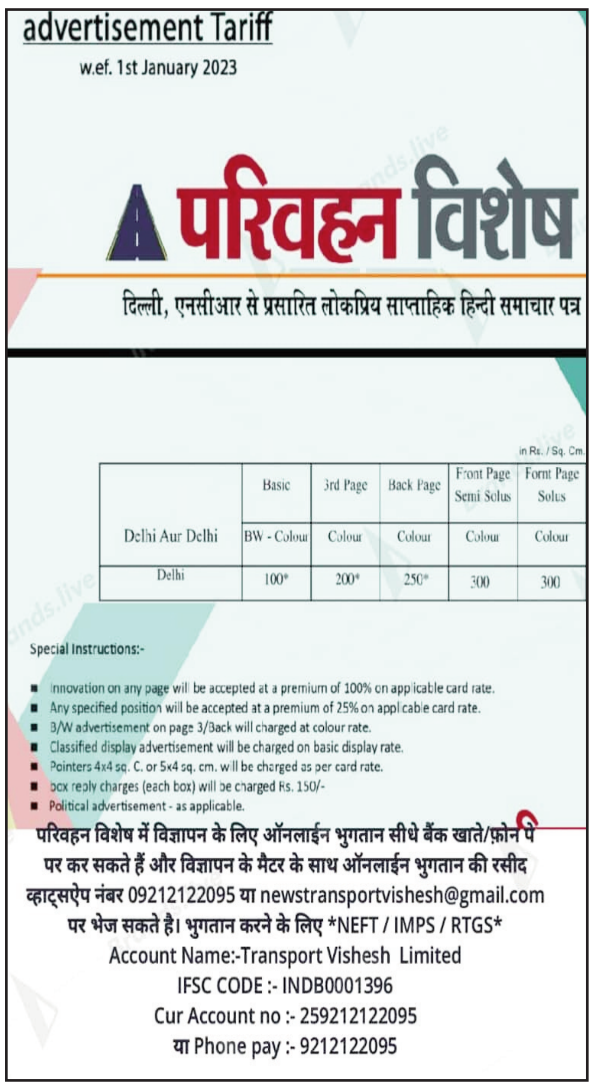

advertisement Tariff

w.e.f. 1st January 2023

परिवहन विशेष

दिल्ली, एनसीआर से प्रसारित लोकप्रिय साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र

in Rs. / Sq. Cm.

Delhi Aur Delhi	Basic	3rd Page	Back Page	Front Page Semi Solus	Fornt Page Solus
	BW - Colour	Colour	Colour	Colour	Colour
Delhi	100*	200*	250*	300	300

Special Instructions:-

- Innovation on any page will be accepted at a premium of 100% on applicable card rate.
- Any specified position will be accepted at a premium of 25% on applicable card rate.
- B/W advertisement on page 3/Back will charged at colour rate.
- Classified display advertisement will be charged on basic display rate.
- Pointers 4x4 sq. C. or 5x4 sq. cm. will be charged as per card rate.
- box reply charges (each box) will be charged Rs. 150/-
- Political advertisement - as applicable.

परिवहन विशेष में विज्ञापन के लिए ऑनलाईन भुगतान सीधे बैंक खाते/फ़ोन पे पर कर सकते हैं और विज्ञापन के मैटर के साथ ऑनलाईन भुगतान की रसीद व्हाट्सऐप नंबर 09212122095 या newstransportvishesh@gmail.com पर भेज सकते है। भुगतान करने के लिए *NEFT / IMPS / RTGS*

Account Name:-Transport Vishesh Limited

IFSC CODE :- INDB0001396

Cur Account no :- 259212122095

या Phone pay :- 9212122095

दिल्ली में पिछले साल दर्ज हुईं सबसे ज्यादा 5,652 सड़क दुर्घटनाएं, MoRTH की रिपोर्ट में खुलासा

साल 2022 में 10 लाख से ज्यादा आबादी वाले शहरों में दिल्ली में सबसे ज्यादा सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। इसके बाद इंदौर और जबलपुर का स्थान है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) की एक रिपोर्ट में यह जानकारी मिलती है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि दिल्ली में 5,652 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं, इसके बाद इंदौर (4,680), जबलपुर (4,046), बंगलूरू (3,822), चेन्नई (3,452), भोपाल (3,313), मल्लापुरम (2,991), जयपुर (2,687), हैदराबाद (2,516) और कोच्चि (2,432) दर्ज किए गए।

10 लाख की आबादी वाले 50 शहरों में कुल सड़क दुर्घटनाओं में से 46.37 प्रतिशत दुर्घटनाएं इन 10 शहरों में हुई।

इन 50 शहरों में 2022 में कुल 76,752 सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। जिनमें 17,089 लोगों की जान चली गई और 69,052 लोग घायल हो गए। ये शहर 17 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों में फैले हुए हैं।

देश में कुल दुर्घटनाओं में से 16.6 प्रतिशत और दुर्घटना से संबंधित कुल मौतों में से 10.1 प्रतिशत मौतें शहरों में हुई।

रिपोर्ट में कहा गया है कि 2021 की तुलना में 2022 में चेन्नई, धनबाद, लुधियाना, मुंबई, पटना और विजाग को छोड़कर सभी 10 लाख से ज्यादा आबादी वाले शहरों में सड़क दुर्घटनाओं और मौतों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है।

2022 में, सड़क दुर्घटना में लगभग 68 प्रतिशत मौतें ग्रामीण क्षेत्रों में हुईं, जबकि शहरी क्षेत्रों में ऐसी 32 प्रतिशत मौतें हुईं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि शराब और नशीली दवाओं के प्रभाव में गाड़ी चलाना, लाल बत्ती तोड़ना और मोबाइल फोन का इस्तेमाल कुल दुर्घटनाओं का 7.4 प्रतिशत और कुल मौतों का 8.3 प्रतिशत है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रति लाख जनसंख्या पर दुर्घटनाओं की संख्या 2021 में 30.3 से बढ़कर 2022 में 33.5 हो गई। जिसमें कहा गया है कि 2022 में 4,61,312 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 1,68,491 लोगों की जान चली गई।

हरियाणा आर्बिटल रेल कॉरिडोर से बदल जाएगी मानेसर की तस्वीर, सड़कों पर कम होगा वाहनों का दबाव

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा आर्बिटल रेल कॉरिडोर बनाए जाने से आईएमटी मानेसर की तस्वीर बदल जाएगी। इसके बनन जाने से सड़कों पर से वाहनों का दबाव कम होगा। वहीं डीजल की भारी बचत होगी। यही नहीं प्रदूषण का स्तर भी कम होगा। कॉरिडोर केएमपी एक्सप्रेस-वे के साथ-साथ विकसित किया जाएगा।

बहुत ही बेहतर प्रोजेक्ट तैयार किया गया है। मारुति कंपनी की कारें कुछ ही मीटर की दूरी पर लोड हो जाएंगी। इससे सड़कों पर से वाहनों का दबाव कम होगा। डीजल की भारी बचत होगी। समय की बचत होगी। इससे कम से कम समय में ग्राहकों तक कारें पहुंच सकेंगी। सड़कों पर से वाहनों का दबाव कम होने पर प्रदूषण का स्तर काफी कम हो जाएगा। एनसीआर में प्रदूषण का स्तर कम करने की आवश्यकता है। खरखौदा के प्लांट भी कारिडोर के नजदीक होंगे।

– आरसी भार्गव, चेयरमैन, मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड

गुरुग्राम। हरियाणा आर्बिटल रेल कॉरिडोर बनाए जाने से आईएमटी मानेसर की तस्वीर बदल जाएगी। कॉरिडोर न केवल आईएमटी मानेसर के नजदीक से गुजरेगा, बल्कि यह देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी मारुति सुजुकी के प्लांट से महज 200 मीटर की दूरी से गुजरेगा।

प्रदूषण के स्तर में आएगी कमी

इससे कंपनी की कारें 200 मीटर की दूरी पर ही मालगाड़ियों में लोड हो जाएंगी। फिलहाल प्लांट से पांच किलोमीटर दूर कारें लोड की जाती हैं। नजदीक ही लोड होने से जहां सड़कों पर से वाहनों का दबाव कम होगा। वहीं डीजल की भारी बचत होगी। यही नहीं प्रदूषण का स्तर भी कम होगा।

बनाए जाएंगे ये नए स्टेशन

हरियाणा रेल इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कारपोरेशन लिमिटेड (एचआरआईडीसी) द्वारा पलवल-मानेसर-सोनीपत के बीच हरियाणा आर्बिटल रेल कॉरिडोर विकसित करने की योजना है। कॉरिडोर पर सोनीपत की ओर से तुर्कपुर, खरखौदा, जसौर खेड़ी, मांडौठी, बादली, देवरखाना, बाढ़सा, न्यू पातली, पचगांव, आइएमटी मानेसर, चंदला डूंगरवास, धूलावट, सोहना, सिलानी और न्यू पलवल में स्टेशन बनाए जाएंगे।

कॉरिडोर केएमपी एक्सप्रेस-वे के साथ-साथ विकसित किया जाएगा। मारुति सुजुकी के तीन प्लांट मानेसर में चल रहे हैं, जबकि खरखौदा में एक प्लांट बन रहा है। आने वाले समय में वहां तीन प्लांट बनाए जाएंगे। सभी प्लांट के नजदीक से कॉरिडोर गुजरेगा। इस तरह प्लांट से कारें सीधे मालगाड़ियों में लोड हो जाएंगी। यही नहीं डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर से पृथला और तावड़ू में जुड़ेगा। इससे कारें मुंबई से लेकर देश के किसी भी हिस्से में कम से कम समय में पहुंच जाएंगी।

वर्ष 2025 तक प्रोजेक्ट पूरा करने का लक्ष्य

पूरा प्रोजेक्ट केएमपी एक्सप्रेस-वे के साथ-साथ विकसित किया जाएगा। प्रतिदिन पांच करोड़ टन माल की ढुलाई मालगाड़ियों के माध्यम से हो सकेगी। 160 किलोमीटर तक प्रति घंटे तक की रफ्तार से ट्रेनें चल सकेंगी। कॉरिडोर पर दो टनल बनाई जाएगी। निर्माण इस तरह किया जाएगा कि डबल स्टेक कंटेनर भी निकल सकें। दोनों टनल (अप-डाउन) की लंबाई 4.7 किलोमीटर होगी। ऊंचाई 11 मीटर और चौड़ाई 10 मीटर होगी।

पलवल रेलवे स्टेशन से लेकर सोनीपत में हरसाना कलां रेलवे स्टेशन तक प्रोजेक्ट की कुल लंबाई 126 किलोमीटर होगी। इसके ऊपर 5618 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। प्रोजेक्ट से सीधे तौर पर पांच जिलों पलवल, गुरुग्राम, नूंह, झज्जर एवं सोनीपत को सीधा लाभ होगा।

आसपास के इलाकों का होगा विकास

गुरुग्राम के उपायुक्त निशांत कुमार यादव का कहना है कि हरियाणा आर्बिटल रेल कॉरिडोर से मानेसर ही नहीं बल्कि आसपास के इलाकों में विकास की गति तेज होगी। आसपास के ग्रामीण इलाकों में भी विकास तेज होगा। इससे रोजगार के नए अवसर सामने आएंगे। सरकार का प्रयास है कि निर्धारित समय के दौरान प्रोजेक्ट पूरा हो।

इंटरनेशनल रोड फेडरेशन चाहता है हेलमेट पर नहीं लगे जीएसटी, वजह है MoRTH के चौंकाने वाले आंकड़े

परिवहन विशेष न्यूज

दोपहिया वाहन चालकों का हेलमेट नहीं पहनना सड़क दुर्घटना में होने वाली मौतों का एक अहम कारण पाया गया है। ऐसे में सड़क दुर्घटना में होने वाली मौतों की संख्या को कम करने के लिए और हेलमेट के इस्तेमाल को प्रोत्साहित करने के लिए इस पर माल और सेवा कर (जीएसटी) को कम करने का एक प्रस्ताव रखा गया है। इंटरनेशनल रोड फेडरेशन (आईआरएफ) ने हेलमेट न पहनने के कारण दोपहिया वाहन चालकों की मौत की बढ़ती संख्या पर चिंता जताई है। एजेंसी अब चाहती है कि हेलमेट पर जीएसटी पूरी तरह से हटा दिया जाए। इस समय भारत में हेलमेट की कीमतों में 18 प्रतिशत जीएसटी लगता है।

रिपोर्ट में चिंताजनक खुलासा

मंगलवार को सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) ने 2022 में भारत में सड़क दुर्घटनाओं पर एक रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में पिछले साल 4.61 लाख से ज्यादा सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। जिनमें 1.68 लाख से ज्यादा लोगों की जान चली गई। मरने वालों की कुल संख्या में से, लगभग 50,029 लोग बिना हेलमेट के दोपहिया वाहन की सवारी कर रहे थे। उनमें से 70 प्रतिशत से ज्यादा राइडर थे।

क्यों कम हो जीएसटी

ऐसे देश में जहां चार पहिया वाहनों की तुलना में दोपहिया वाहन ज्यादा बिकते हैं, वहां हेलमेट का इस्तेमाल अक्सर कम होता है। बिना हेलमेट के गाड़ी चलाने के खिलाफ सख्त कानून होने के बावजूद, बड़े शहरों में भी लोग रोजाना इस ट्रैफिक नियम को तोड़ते हुए पाए जाते हैं। यह देखा गया है कि ज्यादातर दोपहिया वाहन चालक ऐसे हेलमेट खरीदना पसंद करते हैं जो सस्ते होते हैं। ऐसे में इनकी गुणवत्ता से समझौता होता है और दुर्घटना की स्थिति में ये नाकाफी होते हैं। आईआरएफ के अध्यक्ष केके कपिला ने कहा, ₹आईआरएफ दृढ़ता से अनुशंसा करता है कि हेलमेट पर कोई जीएसटी नहीं होना चाहिए। इससे जनता के लिए मानक हेलमेट को ज्यादा किफायती बनाने में मदद मिलेगी। जो उन्हें घटिया गुणवत्ता के हेलमेट खरीदने से हतोत्साहित करेगा।"

कितना है जुर्माना

केंद्रीय मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 129 के मुताबिक, सभी दोपहिया वाहन चालकों के लिए हेलमेट पहनना अनिवार्य है। इस ट्रैफिक नियम का उल्लंघन करने पर दिल्ली में 1,000 रुपये तक का जुर्माना लगेगा। इससे तीन महीने के लिए ड्राइविंग लाइसेंस भी रद्द किया जा सकता है।

इतने ज्यादा उल्लंघन

दिल्ली में बिना हेलमेट के वाहन चलाने के कई मामले सामने आए हैं। दिल्ली पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक, इस साल पहले चार महीनों के भीतर हेलमेट न पहनने पर दोपहिया वाहन चालकों के एक लाख से ज्यादा चालान काटे गए। आपको जानकर हैरत होगी कि इस साल जनवरी और अप्रैल के बीच बिना हेलमेट पहने दोपहिया वाहन चलाने वाले लोगों की संख्या, पिछले साल राष्ट्रीय राजधानी में इस उल्लंघन के लिए जारी किए गए चालान की कुल संख्या से ज्यादा हैं।

टैंपल'स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/ एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण रजिस्टर्ड

कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063, कॉरपोरेट

कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

यंग भारतीय लड़कियों पर तेजी से अटैक कर रहा है ब्रेस्ट कैंसर! रिपोर्ट में सामने आए डरावने तथ्य

दुनिया भर में जिस कैंसर से महिलाएं सबसे ज्यादा प्रभावित होती हैं, वही कैंसर अब भारत में पहले से कहीं अधिक तेजी से पांव पसार रहा है. भारतीय महिलाओं, खासतौर से युवा लड़कियों और महिलाओं में, ब्रेस्ट कैंसर (स्तर कैंसर) के केस ज्यादा देखे जा रहे हैं. डॉक्टरों का कहना है कि 20 से 40 साल की युवा महिलाओं में स्तन कैंसर की घटनाएं काफी बढ़ रही हैं.

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, स्तन कैंसर दुनिया भर में महिलाओं को प्रभावित करने वाला सबसे आम प्रकार का कैंसर है. साल 2020 में 20 लाख से ज्यादा महिलाओं में स्तन कैंसर का पता चला और 6 लाख से अधिक मरीजों की जान चली गई. ब्रेस्ट कैंसर अवेयरनेस (Breast Cancer Awareness) को लेकर हो रहे तमाम सम्मेलनों और रिपोर्ट्स में इस तरह की बातें सामने आ रही हैं.

ब्रेस्ट कैंसर के क्या हैं शुरुआती लक्षण

स्तन कैंसर जागरूकता पर हाल ही में एक वेबिनार के दौरान फरीदाबाद स्थित अमृता हॉस्पिटल की मेडिकल ऑन्कोलॉजी की वरिष्ठ सलाहकार डॉ सफलता बाघमार ने कहा, 'स्तन कैंसर महिलाओं में पाए जाने वाले सबसे आम प्रकार के कैंसर के रूप में हेल्थ चार्ट में सबसे ऊपर है और हाल के दिनों में इसकी घटनाएं बढ़ी हैं. समय पर निदान और प्रभावी उपचार के लिए स्तन कैंसर के शुरुआती चेतावनी संकेतों को पहचानना बेहद जरूरी है. नई गांठें, स्तन की बनावट में बदलाव, त्वचा की अनियमितताएं, निपल से जुड़ी समस्याएं, निपल से खून आने जैसे बदलावों पर नजर रखना बेहद जरूरी है.'

डॉक्टर बाघमार ने कहा, 'इस बारे में खास बात यह भी याद रखनी चाहिए कि ये लक्षण जिनका जिक्र ऊपर किया गया है, वे गैर-कैंसरजन्य बीमारियों या कंडिशन्स से भी जुड़े हो सकते हैं. इसलिए, जब संदेह हो, तो जल्द से जल्द पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए कि यह आखिर क्या है और सही इलाज करवाना चाहिए. वैसे मन की शांति के लिए भी बेहतर है कि पेशेवर मार्गदर्शन लें.' (यह भी पढ़ें– स्तन कैंसर से बचने के लिए 40 की उम्र के बाद जरूर कराएं स्क्रीनिंग)

नेशनल सेंटर फॉर डिजीज इंफॉर्मेटिक्स एंड रिसर्च की नेशनल कैंसर रजिस्ट्री प्रोग्राम रिपोर्ट के अनुसार, 'भारत में स्तन कैंसर महिलाओं में कैंसर के प्रमुख कारणों में से एक है. 2020 में, भारत में दो लाख से अधिक महिलाओं में स्तन कैंसर का इलाज होने का अनुमान लगाया गया था और अनुमान के अनुसार 76,000 से अधिक मौतें हुईं.' इसी रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में यह संख्या बढ़कर 2.3 लाख से अधिक होने की संभावना है.

गुरुग्राम के सीके बिड़ला अस्पताल में ऑन्कोलॉजी के प्रमुख सलाहकार और स्तन केंद्र के प्रमुख डॉ. रोहन खंडेलवाल ने बताया, 'भारत में, स्तन कैंसर की घटनाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, विशेष रूप से 20 के दशक के अंत और 30 के दशक की शुरुआत में युवा भारतीय महिलाओं में.

साल 2030 तक स्तन कैंसर दोगुना!

भारत में, स्तन कैंसर सर्वाइकल (cervical cancer) और ओरल कैविटी कैंसर (Oral Cavity Cancer) को पीछे छोड़ते हुए सबसे आम कैंसर और कैंसर से संबंधित मौतों का प्रमुख कारण बन गया है. अध्ययनों से संकेत मिलता है कि 2030 तक स्तन कैंसर के केस दोगुना होने की संभावना है. 20 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं को रोग का जल्द से जल्द पता लगाने के लिए नियमित स्तन जांच कराने की सलाह दी जाती है."

डॉक्टरों के अनुसार, स्तन कैंसर के 60 प्रतिशत मामलों का निदान आमतौर पर एडवांस स्टेज में किया जाता है, जिससे इलाज की दर कम हो जाती है. फिर भी, नियमित जांच से इलाज की दर 80-90 प्रतिशत तक बढ़ सकती है.

स्तन कैंसर को लेकर कौन से टेस्ट कब करवाएं

कोच्चि के अमृता अस्पताल में रेडियोलॉजी की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. लक्ष्मी आर ने कहा कि किशोरों और 20 से 30 वर्ष की आयु के लोगों के लिए, अल्ट्रासाउंड इमेजिंग सबसे पहले करवाया जा सकता है, इसके बाद अगर आवश्यक हो तो मैमोग्राफी की जाती है. उन्होंने कहा, "30-40 वर्ष की महिलाएं मैमोग्राफी के साथ अल्ट्रासाउंड का विकल्प चुन सकती हैं. कंट्रास्ट-एन्हांस्ड मैमोग्राफी (सीईएम) प्रारंभिक पहचान के लिए एक एडवांस तकनीक है, खासतौर से तब जब मामला ज्यादा पेचीदा लग रहा हो. यह टेक्नोलॉजी एक प्रकार का प्रॉब्लम सॉल्वर है, और यहां तक कि कीमोथेरेपी प्रतिक्रिया मूल्यांकन के चरण और बाद में भी मदद करती है." (यह भी पढ़ें– सामान्य सूत्र प्रदूषण में लंग्स की गंदगी को करेंगे साफ)

उन्होंने कहा, "अगर मैमोग्राफी, अल्ट्रासाउंड और सीईएम में कुछ भी ऐसा लगे कि किसी नतीजे पर न पहुंचा जा रहा हो तो हमारे पास स्तन एमआरआई के साथ जाने का विकल्प है." डॉक्टरों ने अच्छा लाइफस्टाइल रूटीन अपनाने, हार्ट हेल्थ पर ध्यान देने, पौष्टिक खान-पान पर ध्यान देने और शारीरिक रूप से एक्टिव लाइफ स्टाइल रखने की सलाह दी।

> भारत में, स्तन कैंसर सर्वाइकल (cervical cancer) और ओरल कैविटी कैंसर (Oral Cavity Cancer) को पीछे छोड़ते हुए सबसे आम कैंसर और कैंसर से संबंधित मौतों का प्रमुख कारण बन गया है. अध्ययनों से संकेत मिलता है कि 2030 तक स्तन कैंसर के केस दोगुना होने की संभावना है. 20 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं को रोग का जल्द से जल्द पता लगाने के लिए नियमित स्तन जांच कराने की सलाह दी जाती है."

महिलाओं के लिए पीली किशमिश अधिक फायदेमंद या काली किशमिश? एक्सपर्ट ने कंफ्यूजन को किया दूर, बताए 5 चमत्कारी लाभ

किशमिश सेहत के लिए बेहद फायदेमंद मानी जाती है. खासतौर पर महिलाओं के लिए. यदि आप किशमिश को भिगोकर खाते हैं तो इसका आपको दोगुना लाभ प्राप्त हो सकता है. हालांकि, इसका लाभ लेने के लिए महिलाएं अक्सर इस बात को लेकर कंफ्यूज में आती हैं कि उन्हें पीली किशमिश खाना चाहिए या काली किशमिश. जी हां, एक्सपर्ट के मुताबिक, काली किशमिश महिलाओं के लिए अधिक फायदेमंद होती है. यह न सिर्फ प्रेग्नेंसी बल्कि यौन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए भी असरदार मानी जाती है. यह इतनी कारगर है कि इसका पानी भी सेहत के लिए चमत्कार की तरह काम कर सकता है. आइए डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर मेडिकल कॉलेज दिल्ली की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. ज्योति यादव से जानते हैं काली किशमिश के चमत्कारी लाभ-

महिलाओं के लिए काली किशमिश के 5 चमत्कारी लाभ

यौन स्वास्थ्य बेहतर बनाए: एक्सपर्ट के मुताबिक, महिलाओं के लिए काली किशमिश अधिक फायदेमंद होती है. बता दें कि, काली किशमिश में अमीनो एसिड पर्याप्त मात्रा में होता है, जो यौन स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करता है. दरअसल, अमीनो एसिड संभावित रूप से गर्भधारण की संभावना को भी बढ़ा सकता है. इनमें एल-आर्जिनिन की मौजूदगी गर्भाशय और अंडाशय में ब्लड फ्लो को बढ़ा सकती है.

सर्दियों में सेहत के लिए रामबाण है मूंगफली

सर्दियों में सेहत के लिए रामबाण है मूंगफलीआगे देखें...

प्रजनन क्षमता बढ़ाए: महिलाओं को काली किशमिश अपनी डाइट में जरूर शामिल करनी चाहिए. दरअसल, प्रजनन क्षमता को बढ़ाने के लिए काली किशमिश का सेवन काफी फायदेमंद माना जाता है. इसके लिए इसे रातभर भीगने दें और अगले दिन छान लें. इसके बाद किशमिश को पीसकर उसका रस निकाल लीजिए. फिर आप इस मिश्रण को पी सकते हैं.

प्रेग्नेंसी में करें सेवन: काली किशमिश को गर्भावस्था के दौरान अपनी डाइट का हिस्सा बनाना चाहिए. गर्भावस्था के दौरान काली किशमिश को पानी में भिगोने से कब्ज से प्रभावी रूप से राहत मिल सकती है. इसके अलावा काली किशमिश के पानी को डाइट में शामिल करने से गर्भवती महिलाओं को कई लाभ मिल सकते हैं. इसके अलावा, इसका नियमित सेवन एनीमिया को रोकने और हीमोग्लोबिन लेवल को बनाए रखने में मदद कर सकता है.

स्किन के लिए फायदेमंद: विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट से युक्त काली किशमिश स्किन को पोषण देने का काम करती है. बता दें कि, इसके डिटॉक्सिफाइंग और एंटी-एजिंग गुण त्वचा को साफ, चमकदार और लंबे समय तक जवां बनाए रखने में मदद करते हैं. इसके अलावा, विटामिन सी मुंहासे को रोकने में भी मदद करता है. इसका लाभ लेने के लिए रोज एक कप पानी में 8-10 काली किशमिश भिगोकर इसका पानी खाली पेट पीना चाहिए.

इम्यूनिटी मजबूत करे: गर्भावस्था के दौरान इम्यून सिस्टम में बदलाव आते हैं. कई विटामिन और मिनरल से भरपूर काली किशमिश का पानी, इम्यून सिस्टम को मजबूत कर सकता है, जो सामान्य बीमारियों और इंफेक्शन से सुरक्षा प्रदान करता है. वहीं, काली किशमिश के पानी में मौजूद पोटेशियम ब्लड प्रेशर लेवल को स्थिर बनाए रखने में योगदान देता है, जिससे इन कॉम्प्लीकेशन्स की संभावना कम हो जाती है.

40+ के बाद अपनी लाइफस्टाइल में एड करें ये हैल्दी डाइट, रहेंगी हमेशा फिट एंड फाइन

महिलाएं अक्सर अपने खानपान का ध्यान नहीं रखती हैं. अगर आपकी उम्र 40 की हो गई है तो आपको कुछ जरूरी पोषक तत्वों को डेली डाइट में जरूर शामिल करना चाहिए. खासकर ओमेगा-3, प्रोटीन आदि से भरपूर चीजों का सेवन जरूर करें. इससे आप हार्ट डिजीज, ऑस्टियोपोरोसिस, खून की कमी जैसी समस्याओं से बची रह सकती हैं.

जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है शरीर के अंग कमजोर होने लगते हैं. ऐसे में जरूरी हो जाता है कि आप कम उम्र से ही पोषक तत्वों से भरपूर चीजों का सेवन करें. साथ ही बढ़ती उम्र में भी उन सभी विटामिंस, मिनरल्स आदि को डाइट में शामिल करें, जो संपूर्ण सेहत के लिए जरूरी होते हैं. आपको बुजुर्गावस्था में बीमारियों से बचाए रखें. यह बात महिलाओं पर भी लागू होता है. खासकर, जब आपकी उम्र 40 पार हो रही हो तो आयरन, ओमेगा-3, प्रोटीन आदि से भरपूर चीजों का सेवन जरूर करें. अक्सर महिलाओं को पता नहीं होता है कि उन्हें 40 वर्ष की उम्र में कौन-कौन से जरूरी न्यूट्रिएंट्स को अपनी डाइट में शामिल करना चाहिए. आइए जानते हैं न्यूट्रिशनिस्ट लवनीत बत्रा से, जिन्होंने हाल ही में 40 वर्ष की उम्र की महिलाओं के लिए कुछ आवश्यक न्यूट्रिएंट्स के बारे में एक महत्वपूर्ण पोस्ट अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर किया है. जानें, उनके अनुसार आपको इस उम्र के पड़ाव में क्या-क्या डाइट में शामिल करना चाहिए.

1. प्रोटीन

न्यूट्रिशनिस्ट लवनीत बत्रा का कहना है कि महिलाओं को 40 वर्ष की उम्र में प्रोटीन का सेवन जरूर करना चाहिए. इस उम्र में मेनोपॉज होने के पहले कई तरह के हॉर्मोनल बदलाव भी होते हैं. कई बार शरीर में फैट बढ़ जाता है, लीन मसल मास में कमी आ जाती है, जो बाद में उनके दीर्घायु को प्रभावित कर सकता है. ऐसे में बेहद जरूरी हो जाता है कि आप प्रोटीन का सेवन पर्याप्त मात्रा में करें. यह लीन मसल्स के नुकसान को रोकने में मदद कर सकता है.

5 आदतों को डेली लाइफ में शामिल करें महिलाएं, खूबसूरती में आएगा निखार, बन जाएंगी अट्रैक्टिव पर्सनैलिटी

2. बी विटामिन

40 से अधिक की उम्र वाली महिलाओं के लिए बी-विटामिन श्रृंखला वाले विटामिंस भी बेहद जरूरी हैं. आप जो भी खाती हैं, उस भोजन के द्वारा ऊर्जा प्राप्त करने या बनाने के लिए आपके शरीर द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रक्रिया में ये बी-विटामिन काफी मदद करते हैं. साथ ही लाल रक्त कोशिकाओं को भी बनाने में मदद करते हैं.

3. कैल्शियम

जैसे-जैसे महिलाओं की उम्र बढ़ती है, उनकी हड्डियों की डेंसिटी कम होने लगती है और कैल्शियम हड्डियों को मजबूत रखता है. कैल्शियम के सेवन से ऑस्टियोपोरोसिस के जोखिम को कम किया जा सकता है. यह एक ऐसी बीमारी है, जिसमें हड्डियां भंगुर (brittle) हो जाती हैं. कैल्शियम की जरूरत मांसपेशियों के संकुचन, नर्व, हार्ट के कामकाज और अन्य जैव रासायनिक प्रतिक्रियाओं जैसे शरीर के अन्य बुनियादी कार्यों के लिए भी होती है. यदि आप अपनी डाइट में पर्याप्त मात्रा में कैल्शियम शामिल नहीं करती हैं तो शरीर आपकी हड्डियों से कैल्शियम चुराने लगता है, जिससे हड्डियां धीरे-धीरे कमजोर होने लगती हैं.

4. विटामिन डी

महिलाओं के लिए विटामिन डी भी बेहद जरूरी है. यह कैल्शियम को अवशोषित करने में मदद करता है, इसलिए इसका ध्यान रखना बेहद जरूरी है कि आप 40 की उम्र में आकर विटामिन डी भरपूर लें. साथ ही, विटामिन डी डायबिटीज, हृदय रोग सहित अन्य समस्याओं को कम करने में भी बेहद फायदेमंद होता है.

5. आयरन

क्या आप जानती हैं कि आपके शरीर को हीमोग्लोबिन बनाने के लिए आयरन की आवश्यकता होती है? यह एक ऐसा पदार्थ है, जो आपके लाल रक्त कोशिकाओं में मौजूद होता है और पूरे शरीर में ऑक्सीजन ले जाता है. 40 की उम्र ज्यादातर महिलाओं के लिए पेरिमेनोपॉज पीरियड का होता है. ऐसे में आयरन की कमी होने से आपको एनीमिया होने का जोखिम बढ़ सकता है. आयरन रिच डाइट आज से लेना शुरू कर दें.

6. ओमेगा-3 फैटी एसिड्स

माना जाता है कि ओमेगा-3 फैटी एसिड्स कॉग्निशन और हार्ट की सेहत में सुधार करते हैं. ये लाभकारी फैट शरीर के कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड के स्तर को भी सामान्य और नियंत्रित करते हैं. तो आप यदि 40 की हो चुकी हैं तो बेहद जरूरी है कि आप ओमेगा-3 फैटी एसिड से भरपूर फूड्स का सेवन करें.

पटाखों की आग में पुलिस की कार्रवाई 'फुस्स', दिल्ली-NCR में दिवाली बाद हर बार जहर बन जाती है हवा; पढ़ें इनसाइड स्टोरी

परिवहन विशेष न्यूज

छह महीने और अधिकतम तीन साल की सजा का प्रविधान है प्रतिबंध के बावजूद पटाखे फोड़ने पर। रोक लगी होने के बाद भी पटाखों की बिक्री उन्हें जलाने और कार्रवाई के आंकड़ों पर गौर करेंगे तो पता लगेगा कि दोनों में काफी अंतर है। पटाखों की बड़ी खेप पकड़ी तो जाती है पर दीपावली की रात पटाखों का शोर सोने नहीं देता है।

नई दिल्ली। छह महीने और अधिकतम तीन साल की सजा का प्रविधान है प्रतिबंध के बावजूद पटाखे फोड़ने पर। रोक लगी होने के बाद भी पटाखों की बिक्री, उन्हें जलाने और कार्रवाई के आंकड़ों पर गौर करेंगे तो पता लगेगा कि दोनों में काफी अंतर है। पटाखों की बड़ी खेप पकड़ी तो जाती है, पर दीपावली की रात पटाखों का शोर सोने नहीं देता है। जिम्मेदार एजेंसियां नाम के लिए कुछ लोगों के विरुद्ध कार्रवाई करके अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेती हैं।

गत वर्ष दिल्ली पुलिस ने एक अक्टूबर से 19 अक्टूबर तक पटाखों की बिक्री के उल्लंघन के 75 मामले दर्ज कर बिक्री के लिए जमा किए गए 13767.719 किलोग्राम पटाखे जब्त किए थे।

मामले दर्ज कर 7518.5 किलोग्राम पटाखे बरामद किए एक सप्ताह में। अधिकतर मामलों में उत्तर प्रदेश व हरियाणा से दिल्ली में इनकी आपूर्ति की जा रही थी।

हाल में पकड़ी गई बड़ी खेप

26 अक्टूबर : उत्तर पूर्वी जिला पुलिस ने दो अलग-अलग मामलों में कार्रवाई करते हुए 800 किलो से अधिक पटाखे बरामद किए।

21 अक्टूबर : क्राइम ब्रांच ने दो आरोपितों को गिरफ्तार कर 1104 किलोग्राम पटाखे बरामद किए।

17 अक्टूबर : दक्षिणी जिला पुलिस ने तीन आरोपितों को गिरफ्तार कर 1300 किलो पटाखे बरामद किए।

कार्रवाई का प्रावधान

पटाखे बेचने, सप्लाई या भंडारण करने पर आइपीसी की धारा 286 (विस्फोटक पदार्थ को लेकर उपेक्षापूर्ण आचरण), धारा 188 (सरकारी आदेशों की अवहेलना करना) और एक्सप्लोसिव एक्ट 5/9 बी के तहत केस दर्ज किया जाता है।

धारा 286: छह माह की सजा या जुर्माना या दोनों भी।

धारा 188 : दोषी पाए जाने पर एक माह की सजा या 200 रुपये जुर्माना या दोनों।

क्या है ग्रीन पटाखा

सामान्य पटाखों से इतर ग्रीन पटाखों का केमिकल फार्मूला ऐसा होता है कि इनसे पानी की बूंदें निकलती हैं।

प्रदूषण कम होता है और धूलकणों को भी पानी की बूंदें दबा देती हैं।

प्रदूषक तत्व नाइट्रस आक्साइड और सल्फर आक्साइड 30 से 35% तक कम होते हैं।

यह पटाखे लाइट एंड साउंड शो के जैसे हैं, इन्हें जलाने पर खुशबू भी आती है।

सामान्य पटाखों की तुलना में इन पटाखों में 50 से 60 प्रतिशत तक कम एल्युमीनियम का इस्तेमाल किया जाता है। ग्रीन पटाखों पर हरे रंग का स्टीकर और बारकोड लगे होते हैं। हरे रंग वाले स्टिकर इस बात की पुष्टि करने के लिए हैं कि ये ग्रीन पटाखे हैं। इसके अतिरिक्त जानकारी लेने के लिए पटाखे पर लगे बारकोड को स्कैन कर सकते हैं।

गुरुग्राम में नियम

ग्रीन पटाखे भी केवल दीपावली के दिन रात आठ बजे से रात 10 बजे तक ही जला सकते हैं। इसके बाद कार्रवाई करने का नियम है।

क्रिसमस व नववर्ष के अवसर पर रात 11 बजकर 55 मिनट से लेकर रात वि 12 बजकर 30 मिनट तक चलाने की अनुमति होगी।

एक नवंबर से 31 जनवरी 2024 तक जिलाधिकारी के आदेश प्रभावी रहेंगे। उल्लंघन पर कार्रवाई की जाएगी।

एक्सप्लोसिव एक्ट: किसी भी विस्फोटक को बनाने, इंपोर्ट-एक्सपोर्ट करने पर तीन साल की कैद या पांच हजार जुर्माना या दोनों। विस्फोटक को रखने, इस्तेमाल करने, बेचने या ट्रांसपोर्ट करने पर दो साल तक की कैद या तीन हजार रुपये तक का जुर्माना या दोनों का प्रविधान है।

गाजियाबाद और गौतमबुद्ध नगर में पटाखे की बिक्री के लिए लाइसेंस नहीं दिए जाएंगे। वहीं, संयुक्त मुख्य विस्फोटक नियंत्रक मध्यांचल के आगरा कार्यालय से भंडारण और ब्रिकी की अनुमति ली जा सकती है।

गाजियाबाद में इस पुलिस की कार्रवाई

33 मुकदमे
42 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज
729 किलो विस्फोटक बरामद
37 पेटी अवैध पटाखे
62 बोरे अवैध पटाखे

दिल्ली में एक सप्ताह में कार्रवाई

जिला	मामले	बरामदगी
दक्षिण	2	1650.5 किलो
पूर्वी	5	2442.5 किलो
उत्तर पूर्वी	4	853.5 किलो
बाहरी	2	30.4 किलो
शाहदरा	1	109.5 किलो
उत्तर	3	806 किलो
क्राइम ब्रांच	3	1626 किलो

दिल्ली में गिरफ्तारी और बरामद पटाखे

वर्ष	गिरफ्तारी	पटाखे बरामद (लाख रुपये में)
2020	5	2.5
2021	8	5
2022	5	7
2023	3	1

फरीदाबाद में पटाखों की बरामदगी (पिछले तीन साल में)

वर्ष	मामला	पटाखे बरामद
2020	12	15
2021	27	28
2022	34	37

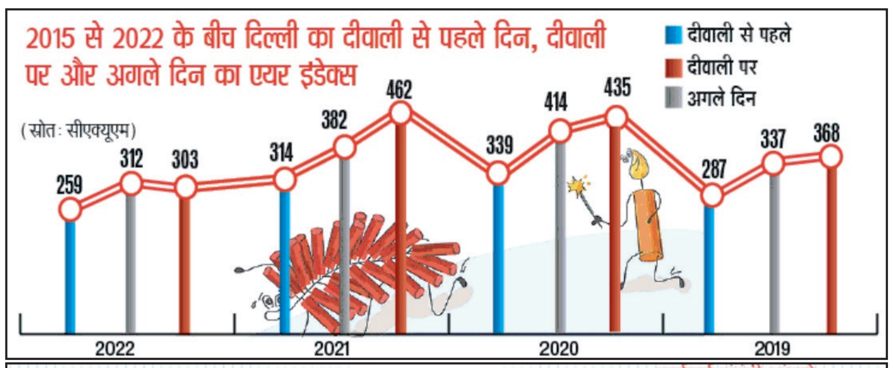

पटाखे बरामद	वर्ष	कार्रवाई	बरामदगी
	2021	1	सवा टन पटाखे
	2022	2	दो टन पटाखे
	2023	2	तीन टन पटाखे (अब तक)

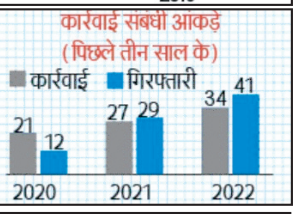

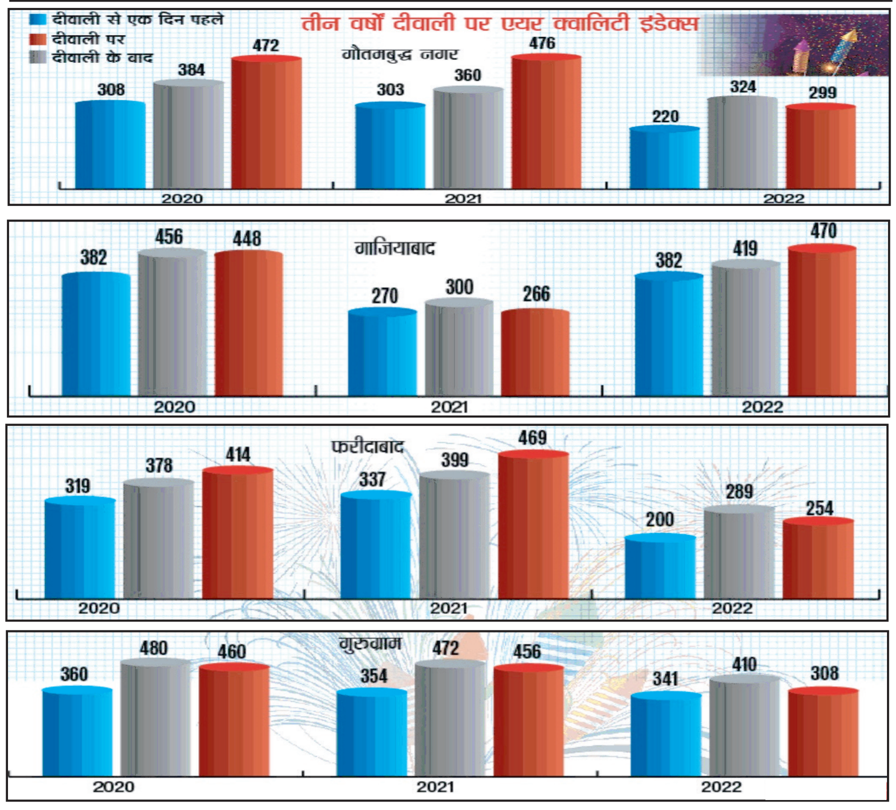

मीट दुकान लाइसेंस पॉलिसी मंदिर से 150 मीटर दूर

परिवहन विशेष। एसडी सेठी। दिल्ली नगर निगम ने मंगलवार को धार्मिक स्थलों से 150 मीटर की दूरी पर मीट की दुकान लाइसेंस पॉलिसी को लागू कर दिया है। इस तय दूरी के दायरे में मांस की दुकान खोलने पर प्रतिबंध रहेगा। इस फैसले को लेकर दिल्ली मीट मर्चेंट एसोसिएशन ने नीति का विरोध किया है। एसोसिएशन का मानना है कि इससे भ्रष्टाचार को बढावा मिलेगा। उल्लेखनीय है कि मंगलवार को दिल्ली नगर निगम की बैठक में सदन की 58 में से 54 प्रस्तावों को मंजूरी दे दी गई है। इसमें मीट की दुकान किसी भी धार्मिक स्थल, श्मशान घाट, के आसपास से 150 मीटर की दूरी को तय किया गया है। अगर लाइसेंस मिलने के बाद वजूद में आए धार्मिक स्थल की बावत विचार नहीं किया जाएगा। वहीं मस्जिद के पास सूअर के मांस को छोडकर मीट की दुकान खोलने के लिए इमाम से एनओसी लेनी जरूरी है। वहीं अभी तक पूर्वी, उत्तर, पश्चिम, निगम क्षेत्रों में मांस की दुकानों के लाइसेंस के लिए 18000 रूपये और प्ररोसिंग यूनिट के लिए 1.50 लाख रूपये की फीस तय की गई है। लाइसेंस दिए जाने की तारीख से 3 साल वित्तीय वर्षों के बाद सभी शुल्क और जुर्माने में 15% की बढोतरी की जाएगी। वहीं मीट मर्चेंट एसोसिएशन ने पॉलिसी के खिलाफ कोर्ट में जाने की धमकी दी है। उधर एमसीडी की नीति के मुताबिक नियमों की अवहेलना पर भारी जुर्मना समेत जेल भेजा जाएगा।

'भाजपा ने किया सफाई कर्मियों का शोषण...', MCD सदन में कर्मचारियों को पक्के करने का प्रस्ताव पास होने पर बोले सीएम

एमसीडी सदन में मंगलवार को पांच हजार कच्चे सफाई कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास होने पर खुशी जाहिर की है। अब उन्होंने बुधवार को प्रेस वार्ता कर सभी कर्मचारियों को बधाई दी है। उन्होंने अपने प्रेसवार्ता में कहा कि दिल्ली के सफाई कर्मियों से किया वादा हमने पूरा किया। नगर निगम में 5000 कच्चे सफाई कर्मियों को हमने पक्का कर दिया है।

नई दिल्ली। MCD सदन में मंगलवार को पांच हजार कच्चे सफाई कर्मचारियों को पक्का करने का प्रस्ताव पास होने पर खुशी जाहिर की है। अब उन्होंने बुधवार को प्रेस वार्ता कर सभी कर्मचारियों को बधाई दी है। उन्होंने अपने प्रेसवार्ता में कहा कि दिल्ली के सफाई कर्मियों से किया वादा हमने पूरा किया। नगर निगम में 5000 कच्चे सफाई कर्मियों को हमने पक्का कर दिया है। सभी को बहुत-बहुत बधाई।

समय पर मिल रहा है कर्मियों को वेतन: केजरीवाल

उन्होंने आगे कहा कि भाजपा के शासन में एमसीडी में बहुत भ्रष्टाचार था, समय पर तनख्वाह नहीं मिलती थी, कर्मचारी पक्के नहीं होते थे, और भी बहुत समस्याएं थीं। 10 माह में हमने एमसीडी में बहुत कुछ सुधार किया है। अब सभी कर्मियों को समय पर वेतन मिलने लगा है। सफाईकर्मियों को नियमित करने का सिलसिला शुरू हो गया है। अभी हमने पांच हजार सफाईकर्मियों को नियमित करने की घोषणा की है। सभी को बहुत बहुत बधाई। दिल्ली वासियों को भी दीवाली और छठ सहित सभी त्यौहारों की ढेरों शुभकामनाएं।

IIT दिल्ली के पूर्व छात्र ने हाईकोर्ट से जज के लिए मांगी मौत की सजा, अब छह महीने काटेगा जेल की हवा

न्यायाधीश के लिए मौत की सजा की मांग करने वाले आईआईटी दिल्ली (IIT Delhi) के पूर्व छात्र को दिल्ली हाईकोर्ट ने छह महीने जेल की सजा सुनाई है। न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत और न्यायमूर्ति शैलिंदर कौर की पीठ ने कहा कि वादी नरेश शर्मा को अपने आचरण और कार्यों पर कोई पश्चाताप नहीं है। नरेश के खिलाफ अगस्त में आपराधिक अवमानना कार्यवाही शुरू की गई थी।

नई दिल्ली। न्यायाधीश के लिए मौत की सजा की मांग करने वाले आईआईटी दिल्ली (IIT Delhi) के पूर्व छात्र को दिल्ली हाईकोर्ट ने छह महीने जेल की सजा सुनाई है। न्यायमूर्ति सुरेश कुमार कैत और न्यायमूर्ति शैलिंदर कौर की पीठ ने कहा कि वादी नरेश शर्मा को अपने आचरण और कार्यों पर कोई पश्चाताप नहीं है। नरेश के खिलाफ अगस्त में आपराधिक अवमानना कार्यवाही शुरू की गई थी।

पीठ ने कहा कि नरेश को अदालत की अवमानना अधिनियम-1971 का दोषी पाया गया है और उन्हें दो हजार रुपये के जुर्माने के साथ छह महीने की अवधि के लिए साधारण कारावास की सजा सुनाई जाती है। जुर्माना अदा न करने पर सात दिनों की साधारण कैद भुगतनी होगी। अदालत ने शर्मा को हिरासत में लेकर तिहाड़ जेल को सौंपने का निर्देश दिया।

पीठ ने कहा कि शर्मा ने अपनी शिकायत में एकल न्यायाधीश को चोर कहा था। शर्मा के कथन पर हैरानी व्यक्त करते हुए पीठ ने कहा कि देश के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे न्यायालय की गरिमा और कानून की न्यायिक प्रक्रिया को बनाए रखते हुए अपनी शिकायतों को सभ्य तरीके से सामने रखेंगे।

अपमानजनक जवाब किया दायर

अदालत ने कहा कि अवमाननाकर्ता ने आक्रोश के कारण याचिकाओं को प्राथमिकता दी, लेकिन कारण बताओ नोटिस जारी होने के बावजूद अत्यधिक अपमानजनक जवाब दायर किया। अवमाननाकर्ता ने एकल पीठ के लिए बेहद अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया है।

मौलिक अधिकार का उल्लंघन किया जा रहा

अदालत ने उक्त टिप्पणी 20 जुलाई को पारित एकल पीठ के आदेश को चुनौती देने वाली नरेश शर्मा की अपील पर सुनवाई करते हुए की। शर्मा ने एकल न्यायाधीश के समक्ष आरोप लगाया कि भारत के संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत उनके मौलिक अधिकार का उल्लंघन किया जा रहा है।

नरेश शर्मा ने अपील याचिका दायर कर 20 जुलाई के एकल पीठ के निर्णय को चुनौती दी थी। एकल पीठ ने नरेश शर्मा की याचिका को खारिज करते हुए 30 हजार रुपये का जुर्माना लगाया था। नरेश ने उक्त याचिका में आरोप लगाया था कि भारत के संविधान के अनुच्छेद-21 के तहत उनके मौलिक अधिकार का उल्लंघन किया जा रहा है।

केजरीवाल के बाद अगला नंबर किसका? राघव चड्ढा ने गिनाए नाम; कहा- भाजपा का I.N.D.I.A के नेताओं को जेल में डालने का प्लान

अरविंद केजरीवाल को ईडी के समन पर आप सांसद राघव चड्ढा ने भाजपा का प्लान आईएनडीआईए के शीर्ष नेताओं को निशाना बनाने का है। आप सांसद ने कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल गिरफ्तार होने वाले पहले व्यक्ति होंगे। इसके साथ ही राघव चड्ढा ने दावा करते हुए और भी नाम गिनाए जिनको एजेंसियां निशाना बना सकती हैं।

नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल को ईडी के समन पर आप सांसद राघव चड्ढा ने भाजपा का प्लान आईएनडीआईए के शीर्ष नेताओं को निशाना बनाने का है। राघव चड्ढा ने आरोप लगाया कि 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा के प्लान के तहत दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल गिरफ्तार होने वाले पहले व्यक्ति होंगे।

पहली गिरफ्तारी केजरीवाल की होगी- राघव चड्ढा

आप सांसद ने बुधवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में दावा किया कि 2014 के बाद से जांच एजेंसियों द्वारा दर्ज किए गए 95 प्रतिशत मामले विपक्षी नेताओं के खिलाफ हैं। राघव चड्ढा ने कहा कि आईएनडीआईए गठबंधन बनने के बाद बीजेपी बौखला गई है। उन्होंने इंडिया गठबंधन के शीर्ष नेताओं को निशाना बनाने का प्लान बनाया है। प्लान में पहली गिरफ्तारी मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की होगी।

राघव चड्ढा ने गिनाए कई नेताओं के नाम

आम आदमी पार्टी के नेता ने कहा कि भाजपा को पता है कि वह दिल्ली की सभी सातों लोकसभा सीटें हार रही है। वह अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार करने की योजना बना रही है, ताकि आप चुनाव न लड़ सके। राघव चड्ढा ने झारखंड, बिहार और बंगाल के नेताओं के भी नाम गिनाए, जिनको जांच एजेंसियों द्वारा निशाना बनाया जाएगा।

राघव चड्ढा ने कहा कि अरविं केजरीवाल के बाद वे झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी को गिरफ्तार करेंगे। इन नेताओं के बाद वे केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन और फिर महाराष्ट्र में शिवसेना और एनसीपी के शीर्ष नेता को गिरफ्तार करेंगे।

जहरीली हुई दिल्ली की फिजा, 350 के पार पहुंचा AQI; आसमान पर छाई स्मॉग की चादर

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रदूषण में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। मंगलवार को दिल्ली का एक्यूआइ 350 का आंकड़ा पार कर गया। समग्रता में यह 'बहुत खराब' श्रेणी में ही रहा लेकिन मंगलवार का दिन सीजन का सबसे प्रदूषित रहा।

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रदूषण में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। मंगलवार को दिल्ली का एक्यूआइ 350 का आंकड़ा पार कर गया। समग्रता में यह 'बहुत खराब' श्रेणी में ही रहा, लेकिन मंगलवार का दिन सीजन का सबसे प्रदूषित रहा। बुधवार को भी दिल्ली के कई इलाकों का एक्यूआइ 400 के पार दर्ज किया गया है। यानी इन क्षेत्रों की हवा 'गंभीर' श्रेणी में पहुंची हुई है। कुछ अन्य इलाकों की हवा भी जल्द ही 'गंभीर' श्रेणी में पहुंच सकती है। आसमान में स्माग की चादर छाने से मौसम में घुटन बढ़ गई है।

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक, बुधवार को दिल्ली के आनंद विहार और मुंडका 400 के पार दर्ज किया गया है, जबकि अधिकतर जगहों पर AQI 300 के पार है। इस स्तर की हवा को 'बहुत खराब' श्रेणी में रखा जाता है। एक दिन पहले मंगलवार को यह 350 था।

राजधानी की हवा में इस समय सामान्य से तीन गुना ज्यादा प्रदूषण है। हवा में प्रदूषक कण पीएम 10 का स्तर 100 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर और पीएम 2.5 का स्तर 60 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर से कम होने पर ही उसे स्वास्थ्यकारी माना जाता है। मंगलवार को हवा में पीएम 10 का स्तर 314 और पीएम 2.5 का स्तर 166 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर यानी मानकों से तीन गुने से भी ज्यादा रहा।

बुजुर्ग व बच्चे रहें सतर्क

सुबह व शाम के वक्त प्रदूषण का स्तर सबसे ज्यादा होता है। इसलिए इन दिनों सुबह व शाम को सैर न करें। सुबह व शाम को सैर करना घातक साबित हो सकता है। बुजुर्गों और बच्चों के लिए यह ज्यादा घातक है। स्वस्थ लोगों को भी सांस की परेशानी हो सकती है।

बुजुर्ग व बच्चे अनावश्यक रूप से घर से बाहर न निकलें, बहुत जरूरी होने पर ही मास्क पहनकर घर से बाहर निकलें।

प्रदूषण से बचाव के लिए एन-95 मास्क का इस्तेमाल करें, कपड़े का मास्क प्रदूषण से ज्यादा बचाव नहीं करता।

करोड़ों की लागत से बने फुटपाथ कूड़ादान में हुए तब्दील, सर्विस लेन चलने के मजबूर हुए लोग

गाजियाबाद में गंदगी की वजह से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हालात यह हैं कि अब राष्ट्रीय राजमार्गों के फुटपाथ भी कूड़ाघर बन गए हैं जिस कारण लोगों को जान हथेली पर रखकर तेज रफ्तार से गुजर रहे वाहनों के बीच से सड़क पर पैदल चलकर मंजिल तक जाना होता है।

गाजियाबाद। शहर में गंदगी की वजह से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हालात यह हैं कि अब राष्ट्रीय राजमार्गों के फुटपाथ भी कूड़ाघर बन गए हैं, जिस कारण लोगों को जान हथेली पर रखकर तेज रफ्तार से गुजर रहे वाहनों के बीच से सड़क पर पैदल चलकर मंजिल तक जाना होता है।

यह हाल तब है जबकि सभी विभाग सड़क हादसों की संख्या में कमी लाने की शपथ हर साल लेते हैं। आंकड़ों की बात करें तो वर्ष 2022 में 363 और वर्ष 2023 में सितंबर माह तक 252 लोगों की मौत सड़क हादसों में हो चुकी है। इनमें कई लोग ऐसे हैं जो कि सड़क पार करते वक्त वाहन की चपेट में आ गए।

NHAI ने करोड़ों की लागत से बनाए थे फुटपाथ

विजयनगर में एनएच-नौ की सर्विस लेन के बराबर में पैदल चलने वालों के लिए एनएचएआई ने करोड़ों रुपये खर्च करके फुटपाथ बनवाया है। एनएच-नौ के दोनों तरफ बने इन फुटपाथ पर अधिकांश जगह ठेली, पटरी लगाकर अतिक्रमण की शिकायत है तो अब जहां पर अतिक्रमण नहीं है, वहां कूड़ादान बनाया जा रहा है।

शांति नगर बाइपास के पास भी यही समस्या है, यहां पर रोजाना फुटपाथ पर ही कूड़ा फेंका जाता है। जिसकी बदबू से लोगों को परेशानी होती है, मजबूरी में स्कूल, कॉलेज से लौटने वाले विद्यार्थियों सहित बुजुर्गों और अन्य लोगों को सड़क पर पैदल चलना पड़ता है। इसके साथ ही गाजियाबाद के रास्ते मेरठ, हापुड़ की ओर जाने वाले लोगों के सामने गाजियाबाद में गंदगी की तस्वीर भी नजर आती है।

सर्विस लेन में गंदगी से बुरा हाल

लोगों ने कहा कि एनएच-नौ की सर्विस लेन के किनारे गंदगी के कारण बुरा हाल है। शहर में कूड़ा निस्तारण की व्यवस्था दुरुस्त नहीं है, गंदगी करने वालों पर सख्ती नही की जा रही है। जिस कारण फुटपाथ पर भी कूड़ा डालने में लोगों को डर नहीं लगता है।

वहीं, एक अन्य व्यक्ति ने कहा कि एनएच-नौ की सर्विस लेन और फुटपाथ को अतिक्रमण से मुक्त कराने के साथ ही सफाई के लिए भी विशेष अभियान चलाया जाना चाहिए, जिससे कि लोगों को आवागमन में परेशानी न हो और सड़क हादसों में भी कमी आए।

शहर में सफाई व्यवस्था को बेहतर करने के लिए सफाई निरीक्षकों को निर्देश दिए गए हैं। फुटपाथ पर कूड़ा फेंके जाने की जानकारी नहीं है, जल्द ही वहां पर सफाई कराने के साथ ही कूड़ा डालने पर पूरी तरह से रोक लगाई जाएगी। जिससे कि लोगों को आवागमन में दिक्कत न हो।

- डॉ. एमके सिंह, नगर स्वास्थ्य अधिकारी।

ऑटो चालक और उसके साथी बच्ची को किया अगवा, मुंह दबाकर हाथ-पैर बांधे और फिर...

खोड़ा थाना क्षेत्र में मंगलवार को आठ साल की बच्ची को ऑटो चालक ने साथी के साथ मिलकर अगवा कर लिया। जाम में ई-रिक्शा चालकों ने देखकर उसे दबोचकर बच्ची को बचाया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। खोड़ा थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति परिवार के साथ रहते हैं। उन्होंने बताया कि उनकी 8 साल की बेटी मामा के घर से लौट रही थी।

गाजियाबाद। खोड़ा थाना क्षेत्र में मंगलवार को आठ साल की बच्ची को ऑटो चालक ने साथी के साथ मिलकर अगवा कर लिया। जाम में ई-रिक्शा चालकों ने देखकर उसे दबोचकर बच्ची को बचाया। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। खोड़ा थाना क्षेत्र में एक व्यक्ति परिवार के साथ रहते हैं। उन्होंने बताया कि उनकी 8 साल की बेटी मामा के घर से लौट रही थी। तभी रास्ते में ऑटो चालक और उसके साथी ने उसे अगवा कर लिया।

मुंह दबाकर हाथ-पैर बांधे

ऑटो में खीच कर उसका मुंह दबा दिया और दोनों हाथ बांध दिए। जैसे ही वह कुछ दूर चले तो जाम लगा हुआ था। आसपास खड़े ई-रिक्शा चालकों ने बच्ची के मुंह को हाथ से दबाया हुआ देखा तो ऑटो के पास पहुंच गए। बच्ची को आरोपितों के चंगुल से छुड़ाया।

लोगों आरोपियों को धुना

बच्ची ने घटना की जानकारी लोगों को दी। लोगों ने आरोपितों की धुनाई की और पुलिस को काल की। पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपित को थाने ले आई।

सहायक पुलिस आयुक्त भास्कर वर्मा ने बताया कि ऑटो चालक सतीश को गिरफ्तार कर लिया गया है। स्वजन की शिकायत पर रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। पूछताछ की जा रही है।

381 करोड़ हुए खर्च फिर भी व्यवस्थाएं राम भरोसे, राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में त्रिफला चूर्ण से हो रहा मरीजों का इलाज

यूनानी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए कमला नेहरू नगर में 10 एकड़ जमीन पर 381.42 करोड़ की लागत से बनाए गए राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में एक साल बाद भी सुविधाओं का अभाव है। परास्नातक और पीएचडी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मेडिकल कालेज भी बनाया गया है लेकिन पढ़ाई शुरू नहीं हुई है।

गाजियाबाद। प्राचीन यूनानी चिकित्सा पद्धति को बढ़ावा देने के लिए कमला नेहरू नगर में 10 एकड़ जमीन पर 381.42 करोड़ की लागत से बनाए गए राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में एक साल बाद भी सुविधाओं का अभाव है।

मसाज सेंटर संचालन को नियुक्त किए गए चार मसाजर ओपीडी काउंटर पर मरीजों की पर्ची बनाने का काम कर रहे हैं। कपिंग थेरेपी का वार्ड बनाया गया है, लेकिन बंद पड़ा है। 200 बेड का इंतजाम हैं लेकिन एक भी मरीज भर्ती नहीं किया गया है। कोई जांच नहीं होती है। परास्नातक और पीएचडी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए मेडिकल कालेज भी बनाया गया है, लेकिन पढ़ाई शुरू नहीं हुई है।

मरीजों को दिया जा रहा है त्रिफला चूर्णा

ओपीडी में त्रिफला चूर्ण से लेकर कफ सिरप देकर मरीजों को जरूर ठीक किया जा रहा है। भर्ती करने का पूरा इंतजाम हैं, लेकिन चिकित्सक नहीं है। संविदा पर रखे गए छह चिकित्सकों में से कई बाहर की दवाएं लिखकर यूनानी चिकित्सा का झंडा बुलंद कर रहे हैं। उद्घाटन से शुरू हुई राजनीतिक रार के साथ ही यहां तैनात स्वास्थ्यकर्मियों में दो गुट बन गए हैं। तीन महीने पहले संस्थान की रार पुलिस थाने तक पहुंच गई थी। एमआरआइ सेंटर शुरू नहीं हुआ है।

पिछले साल हुआ था ओपीडी का उद्घाटन

ओपीडी एक नवंबर को शुरू करने के बाद इसका उद्घाटन 11 दिसंबर 2022 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्चुअल किया था। संस्थान में मुख्य रूप से गठिया, सफेद दाग, एग्जिमा, अस्थमा, माइग्रेन, मलेरिया एवं फाइलेरिया, पेट की समस्या और हड्डी रोगों का इलाज हो रहा है।

एक नवंबर 2022 से लेकर 31 अक्टूबर 2023 तक इस संस्थान में गाजियाबाद के अलावा फरीदाबाद, मेरठ, बुलंदशहर, मुरादाबाद और गुरुग्राम तक के कुल 2.22 लाख मरीजों ने पहुंचकर इलाज कराया है। नवंबर 2022 में जहां 15 हजार मरीजों ने ओपीडी में पंजीकरण कराया वहीं पर अक्टूबर 2023 में 21949 मरीज इलाज कराने पहुंचे। भवन का 70 प्रतिशत हिस्सा ही निर्माण कंपनी वैपकास ने आयुष विभाग को हैंडओवर किया है।

संविदा पर रखे गए हैं छह चिकित्सक मरीजों की तुलना में कम है संख्या

मरीजों को भर्ती करने की सेवाओं का नहीं हुआ संचालन

कपिंग थेरेपी और मसाज सेंटर की फाइल दिल्ली में अटकी

राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान में व्यवस्थाएं राम भरोसे

वर्तमान में संविदा पर छह चिकित्सकों समेत 38 स्वास्थ्यकर्मी तैनात है, जो संस्थान की ओपीडी के सापेक्ष कम है। स्थायी चिकित्सकों की नियुक्ति प्रक्रिया चल रही है। मरीजों को भर्ती करने का निर्णय मंत्रालय स्तर से होगा। भवन का 70 प्रतिशत हिस्सा निर्माण कंपनी ने हैंडओवर कर दिया है। मरीजों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लगातार प्रयास जारी हैं।- मोहम्मद जुल्किफ्ल, ओएसडी राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान

संविदा पर कार्यरत चिकित्सक

डॉ. जमालुददीन
डॉ.सलमा
डॉ.उजमा
डॉ. फातमा जबीन
डॉ.जहीर अहमद
डॉ.शहनंशा वली मोअजम

संस्थान की OPD का एक साल का विवरण

महीने	कुल मरीज	महिला	पुरुष	पुराने मरीज	नए मरीज
दिसंबर	19510	7363	6779	8287	9194
जनवरी	17368	9858	7510	7981	9376
फरवरी	18875	11343	7531	8568	10403
मार्च	18718	9114	10736	9114	9604
अप्रैल	14476	7907	6569	6980	7596
मई	21760	8840	12920	12220	9640
जून	7389	3758	3685	2300	5089
जुलाई	20209	11789	8576	11503	8705
अगस्त	23582	13778	9854	12763	11122
सितंबर	23140	13594	9441	11577	11562

भारतीय सनातन संस्कृति का पालन करके ही विश्व में शांति स्थापित हो सकती है

प्रह्लाद सबनानी

आज कई इस्लामी देश भी पश्चिमी सोच की राह पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं कि केवल हमारा धर्म ही श्रेष्ठ है। इस धरा पर जो भी इस्लाम को नहीं मानता हैं वह काफिर है और उसे जीने का हक नहीं हैं। काफिर या तो इस्लाम को कबूल करे अथवा वह मार दिया जाएगा।

आज पूरे विश्व में अशांति एवं अराजकता का माहौल है। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध चल ही रहा था कि हमास और इजराइल के बीच युद्ध प्रारम्भ हो गया है एवं इस युद्ध में लेबनान एवं सीरिया भी कूद पड़े हैं। इधर चीन की विस्तारवादी नीतियों के चलते उसके अपने लगभग सभी पड़ौसी देशों के साथ सम्बंध अच्छे नहीं चल रहे हैं। ताईवान, मंगोलिया, जापान, इंडोनेशिया, फिलिपीन, नेपाल, भूटान, म्यांमार, भारत आदि जैसे शांतिप्रिय देश भी आज चीन की नीतियों से बहुत परेशान हैं। एक तरफ तो विकसित देश अपनी आर्थिक नीतियों के असफल होने के कारण कई प्रकार की आर्थिक एवं सामाजिक परेशानियों से जूझ रहे हैं, तो दूसरी ओर अफ्रीकी महाद्वीप क्षेत्र में कई देश अभी भी आर्थिक विकास को तरस रहे हैं और इन देशों के नागरिक गरीबी का जीवन जीने को मजबूर हैं। कुल मिलाकर पूरे विश्व में ही त्राहि त्राहि मची हुई है। इन समस्त विपरीत परिस्थितियों के बीच आज भारत की आर्थिक विकास दर विश्व की समस्त बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच लगातार सबसे तेज बनी हुई है, क्योंकि भारत आज अपनी सनातन संस्कृति का पालन करते हुए ही आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, आदि क्षेत्रों में कार्य करता हुआ दिखाई दे रहा है एवं इसके चलते भारत आज कई क्षेत्रों में पूरे विश्व को राह दिखा रहा है।

वैसे भी किसी भी राष्ट्र के मूल में कुछ तत्व निहित होते हैं, जिनके बल पर वह देश आगे बढ़ता है और समाज के विभिन्न वर्गों को एकता के सूत्र में पिरोए रखता है। भारत के एक राष्ट्र के रूप में, इसके मूल में, सनातन हिंदू संस्कृति का आधार है जो हजारों वर्षों से भारत को आज भी भारत के मूल रूप में ही जीवित रखे हुए है। अन्यथा, पिछले लगभग 1000 वर्षों में भारत को तोड़ने के लिए अरब के आक्रांताओं और अंग्रेजों के द्वारा अनेकानेक प्रयास किए गए हैं। अरब के आक्रांताओं एवं अंग्रेजों ने बहुत अधिक प्रयास किए कि किसी तरह भारतीय मूल संस्कृति को तहस नहस किया जाय, शिक्षा पद्धति को ध्वस्त किया जाये, बलात हिंदुओं का धर्म परिवर्तन किया जाय, आदि आदि। इन प्रयासों में उन्हें कुछ सफलता तो अवश्य मिली परंतु पूर्ण रूप से भारतीय संस्कृति को समाप्त नहीं कर पाए। जबकि कई अन्य देशों (ईरान, लेबनान, इंडोनेशिया, मिस्त्र, ग्रीक आदि) में इनके यही प्रयास पूर्ण रूप से सफल रहे एवं वहां के लगभग सम्पूर्ण नागरिकों को इस्लाम में परिवर्तित करने में वे सफल रहे। भारत में चूंकि सनातन हिंदू धर्म का बोलबाला है अतः यहां इन तत्वों को आज तक सफलता नहीं मिली है हालांकि इनके प्रयास अभी भी जारी हैं।

अंग्रेजों ने जब भारत पर शासन करना प्रारम्भ किया तो उनका अज्ञानतावश यह सोच था कि यहां के नागरिक कुछ जानते ही नहीं है और इनकी विज्ञान के प्रति कोई समझ ही नहीं है। उनकी यह भी सोच थी कि भारत कई राज्यों का एक समूह है और यह एक राष्ट्र नहीं है। अंग्रेज तो यह भी सोचते थे कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं रहा है, ना ही अभी यह एक राष्ट्र है और न ही कभी भविष्य में यह एक राष्ट्र रह पाएगा। क्योंकि यहां तो विभिन्न राजा राज्य करते हैं और उनके राज्यों की अलग अलग भौगोलिक सीमाएं हैं इसलिए भारत का एक राष्ट्र्र के रूप में कभी अस्तित्व ही नहीं रहा है। अंग्रेज यह भी मानते थे कि पूरे भारत के लोग एक हो जाएंगे यह कभी सम्भव ही नहीं है।

अंग्रेज अहंकारवश भारतीयों को अनपढ़, असभ्य एवं रूढ़िवादी तक कहते थे। उनकी नजरों में भारतीयों की कोई एतिहासिक उपलब्धि नहीं है एवं भारत के बर्बर, जंगली लोगों को सभ्यता सिखाने का दायित्व हमारा (अंग्रेजों का) है। भारत के लोग प्रशासन करने के अयोग्य हैं। किसी कारण से यदि भारत को स्वतंत्र राष्ट्र का दर्जा दे दिया तो इस देश की बर्बादी सुनिश्चित है और फिर इसकी जवाबदारी हमारी (अंग्रेजों की) होगी। उनको विशेष रूप से हिंदुओं से बहुत डर लगता था और वे हिंदुओं से सावधान रहने की आवश्यकता पर बल दिया करते थे। उनका सोच था कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत बहुत जल्दी बर्बाद हो जाएगा। भारत में लोकतंत्र जीवित नहीं रह सकता, यह बहुत ही अस्वाभाविक राज्य है। भारत आजाद होते ही कई टुकड़ों में बिखर जाएगा क्योंकि यहां 52 करोड़ लोग हैं एवं इनकी अलग अलग भाषाएं हैं ये आपस में लड़ते रहते हैं और कभी भी एक नहीं रह पाएंगे। भारत आजादी के बाद पूरी दुनिया के लिए एक भार बन जाएगा एवं यहां के नागरिक भूख से ही मर जाएंगे। उक्त सोच ब्रिटेन, अमेरिका, लगभग समस्त यूरोपीय देशों सहित कई देशों की भी थी। आज भी आतंकवादी संगठन एवं विदेशी ताकतें जो भारत को अस्थिर करना चाहते हैं वे इसी परिकल्पना पर अपना कार्य प्रारम्भ करते हैं एवं समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में लड़ाने का प्रयास करते नजर आते हैं।

उक्त वर्णित देशों की यह सोच इसलिए थी क्योंकि उनके पास हिंदू सनातन संस्कृति का कोई ज्ञान नहीं था बल्कि उनकी अपनी पश्चिम रंग में रची बसी सोच थी जो केवल "मैं" में विश्वास करती थी उनके लिए देश मतलब केवल भौगोलिक सीमाओं वाला जमीन का टुकड़ा और उस जमीन के टुकड़े पर रहने वाले लोग ही विशेष हैं। उनके सोच में अहम का भाव कूट कूट कर भरा है। केवल मैं ही श्रेष्ठ हूं। इस दुनिया में रहने वाले बाकी सभी लोग हमसे हीन हैं। जर्मन लोगों ने अपना एक विशेष दर्शन शास्त्र दुनिया के सामने रखा जिसमें उन्होंने किसी और दर्शन को स्वीकार न करते हुए केवल अपने दर्शन को ही श्रेयस्कर माना एवं अहंकार का भाव जाहिर किया। जर्मन, फ्रेंच से भिन्न हैं। यूरोप में प्रत्येक देश ने अपने आप को दूसरे देश से बिलकुल अलग रखा हुआ है। पश्चिम का राष्ट्रवाद एकांतिक है इसमें समावेशिता का नितांत अभाव है। इसीलिए आज रूस, यूक्रेन के साथ लड़

रहा है तो जर्मनी की फ्रांस के साथ नहीं बनती है। इसी प्रकार यूरोप के लगभग सभी देशों के आपसी विचारों में किसी न किसी प्रकार की भिन्नता दृष्टिगोचर होती रहती है। जबकि यह लगभग सभी देश ईसाई धर्म को मानने वाले देश हैं।

आज कई इस्लामी देश भी पश्चिमी सोच की राह पर चलते हुए दिखाई दे रहे हैं कि केवल हमारा धर्म ही श्रेष्ठ है। इस धरा पर जो भी इस्लाम को नहीं मानता हैं वह काफिर है और उसे जीने का हक नहीं हैं। काफिर या तो इस्लाम को कबूल करे अथवा वह मार दिया जाएगा। और तो और इस्लामी देशों में भी अलग अलग किस्म के कई फिर्के आपस में ही लड़ते झगड़ते रहते हैं एवं एक दूसरे को अपने से श्रेष्ठ सिद्ध करने की कोशिश में लगे रहते हैं। जबकि भारतीय विचारधारा इसके ठीक विपरीत आचरण करना सिखाती है विशेष रूप से सनातन संस्कृति में जो व्यक्ति जितना विशेष होगा वह उतना ही विनयपूर्ण होगा और इस नाते भारतीय सनातन संस्कृति अविभाजनकारी दर्शन पर चलकर सर्वसमावेशी है। इसमें ईश्वरीय भाव जाहिर होता है। जो मेरे अंदर है वही आपके अंदर भी है अर्थात मुझमें भी ईश्वर है और आपमें भी ईश्वर का वास है। इस प्रकार प्रत्येक भारतीय, चाहे वह किसी भी जाति का हो, किसी भी मत, पंथ को मानने वाला हो, अपने आप को भारत माता का सपूत कहने में गर्व का अनुभव करता है। और, इसलिए भारतीय सनातन संस्कृति अन्य संस्कृतियों को भी अपने आप में आत्मसात करने की क्षमता रखती है। इतिहास में इस प्रकार के कई उदाहरण दिखाई देते हैं। जैसे पारसी आज अपने मूल देश में नहीं बच पाए हैं लेकिन भारत में वे रच बस गए हैं। इसी प्रकार इस्लाम धर्म को मानने वाले लगभग सभी फिर्के भारत में निवास करते हैं जबकि विश्व के कई इस्लामी देशों में केवल एक विशेष प्रकार के फिरके पाए जाते हैं।

भारतीय चिंतन धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार स्तंभों पर स्थापित है। इस दृष्टि से चाहे व्यक्ति हो, परिवार हो, देश यो अथवा विश्व हो, किसी के भी विषय में चिंतन का आधार एकांगी न मानकर एकात्म माना जाता है। भारत के उपनिषदों, वेदों, ग्रंथों में भी यह बताया गया है कि मनुष्य का जीवन अच्छे कर्मों को करने के लिए मिलता है एवं देवता भी मनुष्य के जीवन को प्राप्त करने के लिए लालायित रहते हैं। अच्छे कर्म कर मनुष्य अपना उद्धार कर सकता है इसीलिए भारतीय धरा को कर्मभूमि माना गया है जबकि अन्य देशों की धराओं को भोगभूमि कहा गया है। अन्य धर्म, भोग को बढ़ावा देते हैं जबकि हिंदू सनातन संस्कृति योग को बढ़ावा देती है। इस प्रकार हिंदू धर्म के शास्त्रों, पुराणों एवं वेदों में किसी भी जीव के दिल को दुखाने अथवा उसकी हत्या को निषिद्ध बताया गया है जबकि अन्य धर्म के शास्त्रों में इस प्रकार की बातों का वर्णन नहीं मिलता है। इसी कारण के चलते हिंदू धर्म को मानने वाले अनुयायी बहुत कोमल स्वभाव एवं पूरे विश्व में निवास कर रहे प्राणियों को अपने कुटुंब का सदस्य मानने वाले होते हैं। बचपन में ही इस प्रकार की शिक्षाएं हमारे बुजुर्गों द्वारा प्रदान की जाती हैं।

भारतीय संस्कृति में एकात्मता का सोच है। भारत पूरे विश्व की मंगल कामना करता है एवं "वसुधैव कुटुम्बकम", "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय", जैसे सिद्धांतों पर विश्वास करता है। चाहे किसी भी व्यक्ति की कोई भी पूजा पद्धति क्यों न हो, पूरे भारत में एक जैसा हिंदू दर्शन है। हिंदू दर्शन ही भारत में राष्ट्र तत्व है जो पश्चिम की सोच से अलग है। हिंदू दर्शन एक मौलिक दर्शन है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, अंग्रेजों एवं अन्य कई देशों की सोच के ठीक विपरीत, विभिन्न मत, पंथों को मानने वाले भारतीय 26 विभिन्न राष्ट्रीय भाषाओं के साथ न केवल सफलतापूर्वक एक दूसरे के साथ तालमेल बिठाकर आनंद में रह रहे हैं बल्कि आज भारतीय लोकतंत्र पूरे विश्व में सबसे बड़े मजबूत लोकतंत्र के रूप में अपना स्थान बना चुका है। यह केवल सनातन हिंदू संस्कृति के कारण ही सम्भव हो सका है। सनातन हिंदू संस्कृति में एकात्मता का भाव मुख्य रूप से झलकता है। अतः वर्तमान में आतंकवादियों एवं अन्य कई देशों द्वारा पूरे विश्व में अस्थिरता फैलाने के जो प्रयास किए जा रहे हैं उन्हें भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति के दर्शन को अपनाकर ही पूर्णतः दबाया जा सकता है। वैसे हाल ही के समय में कई देशों यथा- जापान, रूस, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, इंडोनेशिया आदि आदि में भारतीय संस्कृति के प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है।

अब तो विश्व के कई विकसित देशों को भी यह आभास होने लगा है कि भारतीय सनातन संस्कृति इस धरा पर सबसे पुरानी संस्कृतियों में एक है और भारतीय वेदों, पुराणों एवं पुरातन ग्रंथों में लिखी गई बातें कई मायनों में सही पाई जा रही हैं। इन पर विश्व के कई बड़े बड़े विश्वविद्यालयों में शोध किए जाने के बाद ही यह तथ्य सामने आ रहे है। अतः कई देशों को अब यह आभास होने लगा है कि भारतीय सनातन संस्कृति को अपनाकर ही विश्व में शांति स्थापित की जा सकती है।

मारुति सुजुकी ने अक्टूबर 2023 में दर्ज की अब तक की सबसे ज्यादा बिक्री, यूटिलिटी व्हीकल्स का अच्छा परफॉरमेंस

मारुति सुजुकी ने अक्टूबर में 199217 यूनिट की अब तक की सबसे अधिक मासिक बिक्री दर्ज की है। मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने बुधवार को अक्टूबर में अपनी अब तक की सबसे अधिक 199217 यूनिट की मासिक बिक्री दर्ज की जो साल-दर-साल 19 प्रतिशत की वृद्धि है। आपको बता दें कि देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी ने अक्टूबर 2022 में 167520 यूनिट्स डिस्पैच कीं।

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी Maruti Suzuki ने पिछले महीने की सेल्स रिपोर्ट जारी की हैं। कंपनी ने बुधवार बताया कि उसने अक्टूबर 2023 में 1,99,217 यूनिट सेल की हैं, जो मारुति की ओर से की गई अब तक की सबसे ज्यादा सेल है। आइए, कंपनी द्वारा पेश किए आंकड़ो के बारे में जान लेते हैं।

Maruti Suzuki ने पेश किए आंकड़े

मारुति सुजुकी ने अक्टूबर में 1,99,217 यूनिट की अब तक की सबसे अधिक मासिक बिक्री दर्ज की है। मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) ने बुधवार को अक्टूबर में अपनी अब तक की सबसे अधिक 1,99,217 यूनिट की मासिक बिक्री दर्ज की, जो साल-दर-साल 19 प्रतिशत की वृद्धि है। आपको बता दें कि देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी ने अक्टूबर 2022 में 1,67,520 यूनिट्स डिस्पैच कीं।

ऑटो प्रमुख ने एक बयान में कहा कि एमएसआई ने अक्टूबर में 1,77,266 यूनिट पर अपना सर्वश्रेष्ठ घरेलू मासिक डिस्पैच दर्ज किया, जो कि एक साल पहले की अवधि में 1,47,072 यूनिट से 21 प्रतिशत अधिक है। इसकी कुल घरेलू पैसेंजर वाहन बिक्री अक्टूबर 2022 में 1,40,337 यूनिट से बढ़कर पिछले महीने 1,68,047 यूनिट हो गई है।

मिनी सेगमेंट की घटी बिक्री

ऑल्टो और एस-प्रेसो सहित मिनी सेगमेंट कारों की बिक्री अक्टूबर 2022 में 24,936 इकाइयों के मुकाबले घटकर 14,568 इकाई रह गई। इसके अलावा बलेनो, सेलेरियो, डिजायर, इग्निस, स्विफ्ट, टूर एस और वैगनआर सहित इसकी कॉम्पैक्ट कारों की बिक्री एक साल पहले के महीने में 73,685 यूनिट की तुलना में बढ़कर 80,662 यूनिट हो गई है।

यूटिलिटी व्हीकल्स का अच्छा परफॉरमेंस

इसके अलावा ब्रेजा, ग्रैंड विटारा, अर्टिगा और एक्सएल6 सहित यूटिलिटी व्हीकल्स की बिक्री पिछले महीने 91 प्रतिशत बढ़कर 59,147 यूनिट हो गई, जो पहले 30,971 यूनिट थी। एमएसआई ने कहा कि अक्टूबर 2023 में उसका निर्यात 21,951 यूनिट रहा, जो पिछले साल इसी महीने में 20,448 यूनिट थी।

Hero MotoCorp और Bajaj Auto की अक्टूबर 2023 में बढ़ी बिक्री, कंपनियों ने जारी की सेल्स रिपोर्ट

दोपहिया वाहन निर्माता हीरो मोटोकॉर्प ने बुधवार को अक्टूबर 2023 में कुल बिक्री 26 .5 प्रतिशत बढ़कर 574930 यूनिट होने की सूचना दी जबकि पिछले साल इसी महीने में यह 454582 यूनिट थी। बजाज ऑटो ने बुधवार को कहा कि इस साल अक्टूबर में उसकी कुल बिक्री साल-दर-साल 19 प्रतिशत बढ़कर 471188 यूनिट हो गई। आइए बिक्री के आंकड़ो के बारे में जान लेते हैं।

नई दिल्ली। देश की पॉपुलर दोपहिया वाहन निर्माता कंपनी Hero MotoCorp और Bajaj Auto ने सेल्स रिपोर्ट जारी की है। हीरो मोटोकॉर्प की अक्टूबर में बिक्री 26.5 प्रतिशत बढ़कर 5,74,930 इकाई हो गई। वहीं, दूसरी ओर अक्टूबर 2023 में बजाज ऑटो की बिक्री 19 फीसदी बढ़ी है। दोनों की सेल्स रिपोर्ट के बारे में जान लेते हैं।

Hero MotoCorp

दोपहिया वाहन निर्माता हीरो मोटोकॉर्प ने बुधवार को अक्टूबर 2023 में कुल बिक्री 26.5 प्रतिशत बढ़कर 5,74,930 यूनिट होने की सूचना दी, जबकि पिछले साल इसी महीने में यह 4,54,582 यूनिट थी। हीरो मोटोकॉर्प ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि मोटरसाइकिल की बिक्री पिछले महीने 5,29,341 यूनिट थी, जबकि अक्टूबर 2022 में 4,19,568 यूनिट थी, जो 26.2 प्रतिशत अधिक है। समीक्षाधीन महीने में स्कूटर की बिक्री 45,589 यूनिट रही, जबकि एक साल पहले इसी महीने में यह 35,014 यूनिट थी, जो 30.2 प्रतिशत की वृद्धि है। पिछले महीने दोपहिया वाहनों का निर्यात 29 प्रतिशत बढ़कर 15,164 यूनिट हो गया, जबकि एक साल पहले की अवधि में यह 11,757 यूनिट था। कंपनी ने कहा कि उसने अपनी पहली सह-विकसित प्रीमियम मोटरसाइकिल, हार्ले-डेविडसन X440 की डिलीवरी नवरात्रि उत्सव पर शुरू की। एक मेगा डिलीवरी ड्राइव के तहत, भारत में 100 डीलरशिप पर 1,000 यूनिट बेची गईं।

Bajaj Auto

बजाज ऑटो ने बुधवार को कहा कि इस साल अक्टूबर में उसकी कुल बिक्री साल-दर-साल 19 प्रतिशत बढ़कर 4,71,188 यूनिट हो गई। कंपनी ने अक्टूबर 2022 में कुल 3,95,238 यूनिट डिस्पैच की थीं। बजाज ऑटो ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि पिछले महीने डीलरों को इसकी कुल डिलीवरी 36 प्रतिशत बढ़कर 3,29,618 यूनिट हो गई, जबकि पिछले साल इसी महीने में यह 2,42,917 यूनिट थी। कंपनी ने कहा कि यह उसकी अब तक की सबसे अधिक रिटेल सेल थी। हालांकि, अक्टूबर में इसका कुल निर्यात साल-दर-साल 7 प्रतिशत घटकर 1,41,570 यूनिट रह गया, जो एक साल पहले 1,52,321 यूनिट था।

महिंद्रा और टाटा मोटर्स ने सितंबर 2023 में की ताबड़तोड़ बिक्री, EVs की बढ़ी मांग

देश की पॉपुलर कार निर्माता कंपनी Mahindra और Tata Motors ने अपनी सेल्स रिपोर्ट जारी की है। मुंबई स्थित ऑटो प्रमुख ने अक्टूबर 2022 में डीलरों को 61114 यूनिट डिस्पैच की हैं। वहीं टाटा मोटर्स ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि अक्टूबर 2022 में 76537 यूनिट के मुकाबले पिछले महीने कुल घरेलू बिक्री 80825 यूनिट रही जो 6 प्रतिशत की वृद्धि है।

नई दिल्ली। देश की पॉपुलर कार निर्माता कंपनी Mahindra और Tata Motors ने अपनी सेल्स रिपोर्ट जारी की है। महिंद्रा एंड महिंद्रा ने बुधवार को कहा कि अक्टूबर में उसकी कुल रिटेल साल-दर-साल 32 प्रतिशत बढ़कर 80,679 यूनिट हो गई, जो किसी महीने में अब तक की सबसे अधिक डिलीवरी है।

वहीं, टाटा मोटर्स की अक्टूबर 2023 में कुल बिक्री 5.89 प्रतिशत बढ़कर 82,954 यूनिट हो गई, जो पिछले साल के इसी महीने में 78,335 यूनिट थी। आइए, दोनों कंपनियों द्वारा पेश किए गए आंकड़ो के बारे में जान लेते हैं।

Mahindra & Mahindra की सेल्स रिपोर्ट

मुंबई स्थित ऑटो प्रमुख ने अक्टूबर 2022 में डीलरों को 61,114 यूनिट डिस्पैच की हैं। कंपनी ने एक बयान में कहा है कि उसने अक्टूबर में स्पोर्ट्स यूटिलिटी वाहनों और कमर्शियल वाहनों के लिए अपना अब तक का सबसे अच्छा मासिक बिक्री प्रदर्शन दर्ज किया है।

इसमें कहा गया है कि अक्टूबर में यूटिलिटी वाहन डिस्पैच साल-दर-साल 36 प्रतिशत बढ़कर 43,708 यूनिट हो गई, जबकि एक साल पहले की अवधि में ये 32,226 यूनिट थी। हालांकि, पिछले महीने इसका निर्यात 33 प्रतिशत घटकर 1,854 यूनिट रह गया, जो अक्टूबर 2022 में 2,755 यूनिट था। एसयूवी और सीवी दोनों से लगातार तीसरे महीने क्रमशः 43,708 और 25,715 वाहनों की उच्चतम मात्रा हासिल की गई है। हालांकि, मजबूत त्योहारी मांग से कंपनी को उम्मीद है कि उसका बेहतर प्रदर्शन आगे भी जारी रहेगा।

Tata Motors की सेल्स रिपोर्ट

टाटा मोटर्स ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि अक्टूबर 2022 में 76,537 यूनिट के मुकाबले पिछले महीने कुल घरेलू बिक्री 80,825 यूनिट रही, जो 6 प्रतिशत की वृद्धि है। घरेलू बाजार में इलेक्ट्रिक वाहनों सहित यात्री वाहनों की बिक्री 48,337 यूनिट रही, जो एक साल पहले इसी महीने में 45,217 यूनिट थी, जो 7 प्रतिशत अधिक है।

टाटा मोटर्स ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय और घरेलू बाजारों में कुल इलेक्ट्रिक पैसेंजर वाहन की बिक्री 5,465 यूनिट रही, जो एक साल पहले इसी महीने में 4,277 इकाई थी, जो 28 प्रतिशत की वृद्धि है। इसमें कहा गया है कि इसके कुल कमर्शियल वाहनों की बिक्री पिछले महीने 4 प्रतिशत बढ़कर 34,317 यूनिट हो गई है, जो अक्टूबर 2022 में 32,912 यूनिट थी।

Hyundai, MG Motors और Toyota की बिक्री में पिछले महीने आई उछाल, कंपनियों ने जारी किए आंकड़े

दक्षिण कोरियाई वाहन निर्माता ने अक्टूबर 2022 में 58006 यूनिट सेल की हैं। पिछले महीने इसकी घरेलू बिक्री 15 प्रतिशत बढ़कर 55128 यूनिट हो गई जो एक साल पहले इसी महीने में 48001 यूनिट थी। वहीं एमजी मोटर इंडिया ने बुधवार को अक्टूबर 2023 में पिछले साल के इसी महीने की तुलना में रिटेल सेल में 17 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 5108 यूनिट की वृद्धि दर्ज की गई।

नई दिल्ली। देश की पॉपुलर कार निर्माता कंपनियों ने पिछले साल बेचे गए वाहनों के आंकड़े जारी किए हैं। आपको बता दें कि अक्टूबर में हुंडई की बिक्री 18 प्रतिशत बढ़कर 68,728 यूनिट हो गई। वहीं, एमजी मोटर्स और टोयोटा ने बिक्री के मामले में क्रमशः 17 प्रतिशत व 66 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की है। आइए, सभी कंपनियों के बिक्री आंकड़ो के बारे में जान लेते हैं।

Hyundai

दक्षिण कोरियाई वाहन निर्माता ने अक्टूबर 2022 में 58,006 यूनिट सेल की हैं। पिछले महीने इसकी घरेलू बिक्री 15 प्रतिशत बढ़कर 55,128 यूनिट हो गई, जो एक साल पहले इसी महीने में 48,001 यूनिट थी। इस साल अक्टूबर में निर्यात सालाना आधार पर 36 फीसदी बढ़कर 13,600 यूनिट हो गया है।

MG Motors

एमजी मोटर इंडिया ने बुधवार को अक्टूबर 2023 में पिछले साल के इसी महीने की तुलना में रिटेल सेल में 17 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 5,108 यूनिट की वृद्धि दर्ज की गई। एमजी मोटर ने एक बयान में कहा कि कंपनी की कुल बिक्री में ईवी की बिक्री का योगदान लगभग 25 प्रतिशत है।

Toyota

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने बुधवार को कहा कि अक्टूबर में उसकी बिक्री साल-दर-साल 66 प्रतिशत बढ़कर 21,879 यूनिट हो गई। कंपनी ने अक्टूबर 2022 में 13,143 यूनिट डिस्पैच की थीं। टीकेएम ने एक बयान में कहा, पिछले महीने कंपनी ने घरेलू बाजार में 20,542 यूनिट बेचीं और 1,337 यूनिट का निर्यात किया।

छात्र हित में डिजिटल पुस्तकालय

डा. वरिंदर भाटिया

अमेरिकी लेखक माइकल स्टर्न हार्ट डिजिटल लाइब्रेरी की पहली परियोजना के संस्थापक हैं। हार्ट ने इंटरनेट के माध्यम से स्वतंत्र रूप से उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों को एक्सेस करने योग्य बनाया था। डिजिटल लाइब्रेरी से दुनिया में हमें बहुत सारे संसाधन मिलेंगे और हमें व्यक्तिगत सेवाएं भी प्राप्त होंगी।

आधुनिक जीवन में हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। हम तकनीक के उन्नत दौर में रहते हुए बहुत सुखी हैं, लेकिन अभी भी बहुत से लोग शिक्षा और सूचना से वंचित हैं। इस समस्या का समाधान है डिजिटल लाइब्रेरी। इसे ठीक से चलाया जाए तो यह एक सामाजिक क्रांति का काम कर सकता है। निःसंदेह डिजिटल पुस्तकालय छात्र हित में भी है और यह भी कहना होगा कि डिजिटल लाइब्रेरी तक पहुंच की सुविधा के बिना कोई भी शिक्षा संस्थान, चाहे वह कोई स्कूल हो या फिर कॉलेज, ज्ञान अर्थव्यवस्था में प्रासंगिक नहीं रह सकता है। हिमाचल प्रदेश की तरह अन्य राज्यों में भी डिजिटल पुस्तकालय की पहल की दरकार है'

खबरें कह रही हैं कि देश के अग्रणी राज्य हिमाचल प्रदेश में 31 मार्च 2024 से पहले आधुनिक सुविधाओं वाले डिजिटल पुस्तकालय तैयार किए जाएंगे। राज्य के माननीय मुख्यमंत्री जी ने राज्य पुस्तकालय सहित और जिला पुस्तकालयों में टच स्क्रीन, सर्वर व सोशल साइट्स पर निशुल्क पढ़ाई की सुविधा मुहैया करवाने के निर्देश जारी कर दिए हैं। आइए, डिजिटल पुस्तकालय के विचार के महत्व और प्रासंगिकता को समझें। डिजिटल पुस्तकालय एक ऐसा पुस्तकालय है जिसमें पुस्तकों का संग्रह डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में होता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों एवं कंप्यूटर के माध्यम से इसका उपयोग किया जा सकता है। डिजिटल लाइब्रेरी को ऑनलाइन लाइब्रेरी, इंटरनेट लाइब्रेरी, डिजिटल रिपॉजिटरी या डिजिटल संग्रह के रूप में भी जाना जाता है। यह डिजिटल वस्तुओं का एक ऑनलाइन डेटाबेस है, जिसमें टेक्स्ट, इमेज, ऑडियो, वीडियो, डिजिटल दस्तावेज के रूप में पुस्तकें शामिल हो सकती हैं। इस प्रकार की लाइब्रेरी को इंटरनेट के माध्यम से एक्सेस किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, डिजिटल पुस्तकालयों में दस्तावेजों को एक व्यवस्थित इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में और इंटरनेट या स्टोरेज के माध्यम से संग्रहीत किया जाता है। 1994 में, डिजिटल लाइब्रेरी शब्द को पहली बार विश्व में नासा डिजिटल लाइब्रेरी द्वारा इस्तेमाल किया गया था।

अमेरिकी लेखक माइकल स्टर्न हार्ट डिजिटल लाइब्रेरी की पहली परियोजना के संस्थापक हैं। हार्ट ने इंटरनेट के माध्यम से स्वतंत्र रूप से उपलब्ध इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों को एक्सेस करने योग्य बनाया था। डिजिटल लाइब्रेरी से दुनिया में हमें बहुत सारे संसाधन मिलेंगे और हमें व्यक्तिगत सेवाएं भी प्राप्त होंगी। हम नए उत्साहजनक अवसरों को प्राप्त कर सकते हैं, जैसे सहयोग, डेटा साझा करना और इनोवेट करना। इस नए आयाम को अपनाने वाली डिजिटल लाइब्रेरियां अपने उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने में और उन्नति करने में सक्षम होंगी। डिजिटल लाइब्रेरी के होते किताब उपलब्ध नहीं रहने पर भी अब विद्यार्थियों की पढ़ाई नहीं रुकेगी। डिजिटल लाइब्रेरी रहने से बच्चों को किताब नहीं रहने पर भी पढ़ाई निर्बाध हो सकेगी। भौतिक स्थान से संबंधित बाधाओं के कारण पारंपरिक पुस्तकालयों में विभिन्न प्रकार की सामग्री को शामिल करने के लचीलेपन का अभाव है। लेकिन डिजिटल लाइब्रेरी एक आभासी वातावरण में सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला- ई-पुस्तकें, पत्रिकाएं, लेख, ब्लॉग, पेपर, वीडियो, पॉडकास्ट और ऑडियोबुक संग्रहीत करती है। आजकल परिष्कृत डिजिटल लाइब्रेरी अपने उपयोगकर्ताओं के लिए किसी भी समय और कहीं भी सामग्री उपलब्ध कराने के लिए संसाधनों को क्लाउड में संग्रहीत करती है। बड़े विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों के विपरीत छोटे पुस्तकालयों में अक्सर नई किताबें, पत्रिकाएं और अन्य सामग्री-संसाधन खरीदने के लिए पर्याप्त संसाधनों की कमी होती है। लेकिन शिक्षा संस्थान डिजिटल लाइब्रेरी को नियमित रूप से अपडेट कर सकता है। आजकल कई प्रकाशक डिजिटल पुस्तकालयों को नवीनतम संस्करणों और पत्रिकाओं को पढने के अनुसार भुगतान करें मॉडल के आधार पर पाठकों के लिए सुलभ बनाने की अनुमति देते हैं। इसलिए डिजिटल लाइब्रेरी नवीनतम प्रकाशनों तक पहुंच प्रदान करके पाठकों को जोड़ती है। प्रिंटेड पुस्तकें अभी भी ई-पुस्तकों की तुलना में अधिक लोकप्रिय हैं। लेकिन डिजिटल फॉर्मेट में किताबें पढने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। पारंपरिक पुस्तकालयों के विपरीत डिजिटल पुस्तकालय पाठकों को कंप्यूटर, मोबाइल डिवाइस या टैबलेट जैसे किसी भी उपकरण का उपयोग करके इंटरनेट पर डिजिटल संसाधनों तक पहुंचने में सक्षम बनाते हैं। पारंपरिक पुस्तकालय का दौरा करते समय पाठकों को सही पुस्तक खोजने के लिए समय और प्रयास दोनों लगाना पड़ता है। साथ ही, मुद्रित पुस्तक से प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करने में समय लगता है।

लेकिन डिजिटल लाइब्रेरी को अंतर्निहित खोज विकल्पों के साथ डिजाइन किया गया है। कई डिजिटल लाइब्रेरी लोकप्रिय खोज इंजनों का लाभ उठाकर सामग्री खोज को भी तेज कर देती हैं। इसीलिए पाठक आवश्यक जानकारी तुरंत पा सकते हैं। इसके अलावा, वे केवल प्रासंगिक शब्दों और वाक्यांशों को दर्ज करके डिजिटल संसाधनों को खोजने और क्रमबद्ध करने के लिए खोज विकल्प का उपयोग कर सकते हैं। एक पारंपरिक पुस्तकालय का दौरा करने के लिए, पाठकों को खुलने और बंद होने के समय की जांच करनी होगी और फिर उसके अनुसार योजना बनानी होगी। उनके पास अपनी सुविधानुसार पुस्तकालय संसाधनों तक पहुंचने के विकल्प का अभाव है। लेकिन डिजिटल लाइब्रेरी पाठकों को 24 घंटे ई-पुस्तकें पढने, ऑडियोबुक सुनने और वीडियो देखने में सक्षम बनाती है। पाठक अपने पसंदीदा उपकरणों का उपयोग करके कभी भी और कहीं भी पुस्तकालय सामग्री को डिजिटल प्रारूप में एक्सेस और पढ़ सकते हैं। इन दिनों कई पाठक अपनी गति और सुविधा से सामग्री तक पहुंचने के लिए पारंपरिक पुस्तकालयों की तुलना में डिजिटल पुस्तकालयों को प्राथमिकता देते हैं।

किसी पारंपरिक पुस्तकालय में जाते समय, कई पाठक एक ही पुस्तक को एक साथ नहीं पढ़ सकते हैं। उन्हें दूसरे पाठक द्वारा पुस्तक वापस करने का इंतजार करना पड़ता है। लेकिन कई पाठक डिजिटल वातावरण में एक ही समय में एक ही किताब, वीडियो और ऑडियोबुक तक पहुंच सकते हैं। देश के अनेक पुस्तकालयों में डिजिटल प्लेटफॉर्म की सुविधा न होने की वजह से पाठकों को टैब व इंटरनेट जैसी सुविधाओं का खुद ही खर्चा उठाना पड़ता है। ऐसे में डिजिटल पुस्तकालय बनाकर पाठकों को सुविधाएं देने का फायदा देने वाला है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे पाठकों को आधुनिक सुविधाओं वाले डिजिटल पुस्तकालय बनने से बड़ी राहत मिलती है। क्यों न देश के सभी राज्यों मे नवमी क्लास से ऊपर सभी शिक्षा संस्थानों में डिजिटल पुस्तकालय शुरू किए जाएं। आधुनिक जीवन में हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत सारे बदलाव हुए हैं। हम तकनीक के उन्नत दौर में रहते हुए बहुत सुखी हैं, लेकिन अभी भी बहुत से लोग शिक्षा और सूचना से वंचित हैं। इस समस्या का समाधान है डिजिटल लाइब्रेरी। इसे ठीक से चलाया जाए तो यह एक सामाजिक क्रांति का काम कर सकता है। निःसंदेह डिजिटल पुस्तकालय छात्र हित में भी है और यह भी कहना होगा कि डिजिटल लाइब्रेरी तक पहुंच की सुविधा के बिना कोई भी शिक्षा संस्थान, चाहे वह कोई स्कूल हो या फिर कॉलेज, ज्ञान अर्थव्यवस्था में प्रासंगिक नहीं रह सकता है। हिमाचल प्रदेश की तरह अन्य राज्यों में भी डिजिटल पुस्तकालय की पहल की दरकार है। देश के सभी राज्यों में इसी तरह की पहल होनी चाहिए। आधुनिक युग में ज्ञान एवं सूचना तक आसान पहुंच बनाना जरूरी है।

संपादक की कलम से

खेल का 'सौतेला' पक्ष

खेल तो खेल होता है। इतिहास में अर्जुन महानतम तीरंदाज थे, लेकिन एकलव्य भी कमतर नहीं था। फर्क शाही परिवार और भील समुदाय का था, लेकिन गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य की तीरंदाजी का हुनर देखा, तो आशंकित हो गए कि भविष्य में वह अर्जुन को चुनौती दे सकता था, लिहाजा गुरु दक्षिणा के तौर पर उन्होंने एकलव्य का अंगूठा मांग लिया। एकलव्य द्रोणाचार्य की मूर्ति बनाकर और उन्हें गुरु मानकर तीरंदाजी का अभ्यास करता था। बहरहाल यह अध्याय इतिहास में दर्ज है। आधुनिक संदर्भों में इसका विश्लेषण सामान्य खिलाड़ी बनाम पैरा एथलीट के तौर पर किया जा सकता है। चीन के हांगझाऊ एशियाई खेलों में भारत के सामान्य खिलाडियों ने कुल 117 पदक जीते, जबकि पैरा खिलाडियों ने कुल 111 पदक हासिल किए। बहुत ज्यादा अंतर नहीं है। दोनों तरह के खिलाडियों ने 'भारत राष्ट्र' के लिए पदक जीते। दोनों की ही जीत पर 'तिरंगा' सम्मानित हुआ और राष्ट्रगान 'जन गण मन'' की धुन बजी। हम सवाल उठा रहे हैं कि पैरा खिलाडियों के प्रति सरकारी और प्रशासनिक रवैया उदासीन, नकारात्मक और सौतेला क्यों है? दोनों तरह के खिलाडियों की उपलब्धियां कम-ज्यादा नहीं हैं। दोनों ही 'राष्ट्र-नायक' हैं। दोनों को ही प्रधानमंत्री मोदी ने बधाई और शाबाशी दी है। भविष्य की सफलताओं के प्रति शुभकामनाएं जताई हैं, लेकिन सरकारी मदद, समर्थन, सहयोग, प्रशिक्षण और बुनियादी ढांचे को लेकर दोनों के बीच गहरे फासले क्यों हैं? सामान्य खिलाडियों को महंगे और शीर्ष स्तर के विदेशी प्रशिक्षण भी मुहैया कराए जाते हैं, लेकिन पैरा खिलाड़ी को अपने ही शहर में प्रशिक्षण और अभ्यास के लिए एक कोने से दूसरे कोने तक भागना पड़ता है। यदि सुवर्णा राज को चक्का और गोला फेंक में सरकारी सहायता मिलती और नोएडा प्रशासन रोड़े न अटकाता, तो वह निश्चित तौर पर पदकवीर खिलाड़ी बन पाती।

अब भी वह शीर्ष 8 खिलाडियों में शामिल हुई है। चूंकि पैरा खिलाड़ी किसी न किसी स्तर पर दिव्यांग होता है, लिहाजा उसकी कहानी उसके संकल्पों, मेहनत और जुनून की ही कहानी है। जिस बच्ची ने पैरों से तीरंदाजी की और सटीक निशाना लगाया, उसकी प्रतिभा और अभ्यास विलक्षण हैं। आश्चर्य होता है कि यह हुनर उसने कैसे हासिल किया? भाला फेंक में सुमित अंतिल टोक्यो ओलंपिक के पैरा चैम्पियन हैं। इस बार भी उन्होंने स्वर्ण पदक जीता है। उनकी एक टांग कृत्रिम है, जिसके सहारे भाग कर वह भाला फेंकते हैं। एशियाई खेलों के संदर्भ में प्रीति पाल का उदाहरण भी गौरतलब है, जो थोड़े से अंतर से दो पदक चूक गईं। मेरठ की यह धावक मुकाबला इसलिए हार गई, क्योंकि अभ्यास के लिए उसे सिंथेटिक ट्रैक उपलब्ध नहीं कराया गया। ऐसे कई पैरा खिलाड़ी होंगे, जो जीत सकते थे, लेकिन अंततः पराजित हो गए। वे जीत गए होते, तो पदकों की संख्या कुछ ज्यादा ही होती और नया कीर्तिमान रचा जा सकता था। पैरा खिलाडियों के लिए कई विसंगतियां हैं, जिनके साथ ही उन्हें खेल का अभ्यास करना पड़ता है। मसलन-2021 में राष्ट्रीय पैरा चैम्पियनशिप तमिलनाडु में होनी थी, लेकिन प्रतियोगिता शुरू होने के चार दिन पहले ही यह कर्नाटक स्थानांतरित कर दी गई। ऐसा क्यों किया गया, आज तक कोई स्पष्टीकरण नहीं है। इसी तरह 'पैरालंपिक कमेटी ऑफ इंडिया' ऐसे खिलाडियों की बुनियादी संस्था है, लेकिन 2019 में खेल मंत्रालय ने खेल संहिता के उल्लंघन के मद्देनजर उसकी मान्यता ही रद्द कर दी, लेकिन एक साल बाद फिर बहाल कर दी। यह क्या 'तुगलकवाद' है? मान्यता और संगठन के बिना तो खिलाड़ी 'अनाथ' ही होता है। इस दौरान पैरा खिलाडियों ने क्या प्रशासनिक दिक्कतें झेली होंगी, उनकी भी अलग ही कहानी है। इन समस्याओं के अलावा, पैरा खिलाडियों के लिए 'विशेषज्ञ कोच' की भी बहुत कमी है, जबकि सामान्य खिलाड़ी विदेश में उन कोचों के साथ प्रशिक्षण कर रहे हैं, जो अपने दौर के विश्व चैम्पियन रहे हैं। मौजूदा वित्त वर्ष में खेल मंत्रालय को 3397.32 करोड़ रुपए का बजट आवंटित किया गया था, लेकिन पैरा खिलाडियों के हिस्से की धूप छाया ही बनी रही है। बेशक मोदी सरकार के दौरान खेल और खिलाडियों पर खूब फोकस रहा है। उसके नतीजे भी मिल रहे हैं, लेकिन किसी भी स्तर पर 'सौतेला भाव' खेल के बढ़ते ग्राफ को अवरुद्ध कर सकता है।

राय

यह सिर्फ मैच नहीं

क्योंकि यह हिमाचल के धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम में हुआ, इसलिए प्रकृति के विहंगम दृश्यों का समावेश वल्ड मैचों की श्रृंखला का श्रृंगार बढ़ा गया। खास तौर पर जब बादलों की एक टोली स्टेडियम में आई और मैच की निगाहों में वो फलसफा बन गए जो जानते नहीं थे कि यहां तो कृत्रिम प्रकाश में भी खलल पड़ जाएगा। एक अच्छी क्रिकेट रविवार की दोपहरी में उगी और शाम से रात आते-आते पर्यटन की नजरों में समा गई। बेशक अच्छी क्रिकेट ने मन, भारतीय टीम ने दिल जीता, लेकिन दर्शक दीर्घा का वीआईपी अंदाज सियासी वीरता के नगमों में तल्लीन रहा। कितना सौहार्द है इस पैमाने में, न होंठ तेरे बुझे, न मेरे जले। उस हंसी की बिसात का कोई टिकट नहीं और न ही कहीं से पकड़े जाने का गिला। पकड़े तो स्टेडियम से बाहर दर्शक गए, क्योंकि नकली टिकट बिक रहे थे। ब्लैकमेल भी इसी स्टेडियम के इसी मैच की निशानी दे गया। सब कुछ घर जैसा था, सिर्फ प्रदेश में कुछ अलग था क्योंकि वहां स्टेडियम के बादलों से भिन्न जिन बादलों ने घर उजाड़े थे, उसकी शिकन कहां क्रिकेट के मनोरंजन में खलल डाल सकती होगी। यहां तो ताली भी वीआईपी अंदाज में बजनी थी, तो खूब बजी। एक हाथ भाजपा तो दूसरा कांग्रेस का बजा। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर वहां क्रिकेट के मसीहा थे, वैसे वह आजकल हमीरपुर से कांगड़ा तक की सडक़ों पर छाए हैं और क्रिकेट के प्रशंसकों का स्वागत करते नहीं थक रहे, लेकिन स्टेडियम में जो आए, उन्हीं के बुलावे पर आए, वरना इस शहर को तो बस मिला यातायात प्लान, मीलों के घुमाव और जाम में ठहराव।

बेशक कुछ होटल भर गए, लेकिन स्टेडियम में वही खुशनसीब थे जिन्हें पास के साथ मुफ्त भोजन का ईनाम मिला, वरना स्टैंड में बिकते पानी की कीमत सुनकर तो पसीना दर्शकों को भी खूब आया होगा। वहां कितने क्रिकेट प्रेमी और कितने सियासी सैलानी रहे होंगे, यह तुलनात्मक अध्ययन की बिसात तय करेगी। यह दीगर है कि जहां कैमरों की निगरानी में खुशामदीद कहा जा रहा था, वहीं खेलों का हिमाचली नायक नदारद था। बेहतर होता उस हुजूम में एक अदद निमंत्रण एशियन गेम्स से लौटे हिमाचली खिलाडियों का चेहरा भी दिखा देता। वाकई कबड्डी के अंतरराष्ट्रीय मैदानों से उस दिन बहुत बड़ा था क्रिकेट का स्टेडियम। कितने छोटे हैं बिलासपुर की स्नेहलता के प्रयास, जिसने अपने खेतों में प्रशिक्षण देते हुए हैंडबाल की ऐसी नर्सरी उगा दी जो देश के लिए अंतरराष्ट्रीय तमगे ले आती है। धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम की रौनक के ठीक नीचे भारतीय खेल प्राधिकरण का स्टेडियम और समीपवर्ती कालेज की घास भी रही होगी, जिसकी जमीन पर उपर्युक्त स्टेडियम बना है। वे पंख भी उड़ान भरना भूल गए जो इंद्रूनाग, बीड़-बिलिंग व नरवाना साइट से पैराग्लाइडिंग के इतिहास को आकाश में ले जाना चाहते थे। बहुत पहले जब क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण राजनीतिक आंखों की किरकिरी बना था, तब अचानक कांग्रेस सरकार ने ताले जड़े थे। क्या वे मुख्यमंत्री सुखविंदर सुक्खू के स्टेडियम प्रवेश से पूरी तरह टूट गए। क्या खेलों में इसी तरह का सौहार्द धर्मशाला में हाई अल्टीच्यूट स्पोट्र्स सेंटर को भी नसीब होगा। वहां खेल मंत्री अनुराग ठाकुर के साथ क्रिकेट मुस्कराई, लेकिन ठीक इसी स्टेडियम के बगल में कोई धर्मशाला खेल एक्सीलेंस सेंटर के तहत राष्ट्रीय खेल छात्रावास के लिए आए 26 करोड़ के बजट को निगल चुका था। यह छात्रावास निचले सकोह में प्रस्तावित था, लेकिन दुनिया तो अब सिर्फ क्रिकेट देखती है और समझती है कि हमने कितना जश्न पैदा किया, लेकिन अंतरराष्ट्रीय मंचों पर केवल एक एथलीट के कारण भी देश का राष्ट्रगान बज उठता है। कभी तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने धर्मशाला को खेल नगरी या राजधानी कहा था।

सेल्फी से मौतें : खुद ही बेमौत मर रहे लोग

अब इसे लापरवाही कहें या कुछ और, यह अहम सवाल है कि अपनी ही लापरवाहियों के कारण लोग डूबते जा रहे हैं। देश में घटित हो रहे ऐसे हादसों के लिए प्रशासन व पुलिस भी जिम्मेवार हैं। साथ ही लोगों को भी अब बढ़ते हादसों से सीख लेनी होगी'

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पर्यटक सेल्फी लेते समय असमय ही काल के गाल में समाते जा रहे हैं। देश में समय-समय पर ऐसे हादसे होते रहते हैं, मगर सबक न सीखना लोगों की आदत बन गई है। कभी रेल से लटकते समय, कभी पटरियों पर सेल्फी ली जाती है, तो कभी बहते पानी में ली जाती है। चट्टानों पर खड़े होकर भी सेल्फी ली जा रही है। पहाडियों पर चढक़र पांव फिसल रहे हैं। सेल्फी जानलेवा साबित हो रही है। सेल्फी की यह खतरनाक प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। ताजा घटनाक्रम में झारखंड के देवधर में सेल्फी के चक्कर में बैराज में कार गिरने से एक ही परिवार के पांच लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। विजय दशमी के मौके पर चलती कार में स्टेयरिंग थाम लिया और सेल्फी लेने लगा। सेल्फी लेने के चक्कर में कार अनियंत्रित हो गई और पुल की रेलिंग तोड़ते हुए बैराज में गिर गई। कुछ वर्ष पहले गुरुग्राम में सेल्फी लेते समय चार युवकों की दर्दनाक मौत हो गई थी। यह चलती रेल के सामने सेल्फी लेना चाहते थे कि बेमौत मारे गए। देश में यह कोई पहला हादसा नहीं है। हर रोज सेल्फी की वारदातें हो रही हैं। जरा सी असावधानी से सेल्फी घातक सिद्ध हो रही है। देश में सेल्फी के हर रोज ऐसे दर्दनाक हादसों से आत्मा सिहर उठती है कि कुछ लोग जान-बूझकर मौत के आगोश में समाते जा रहे हैं। नदियों के किनारे लोग डूब रहे हैं। खुद ही मौत के मुंह में समाते जा रहे हैं। सेल्फी के कारण परिवार के परिवार तबाह हो रहे हैं। केन्द्र सरकार को ऐसे मामलों पर संज्ञान लेना होगा। देश के युवा सेल्फी लेते समय इतने अंधे कैसे हो जाते हैं कि अपनी जान जोखिम में खुद डाल देते हैं और असमय ही बेमौत मारे जा रहे हैं। ऐसी त्रासदियां असमय ही घर के चिरागों को बुझा रही हैं। अगर इन मामलों पर संज्ञान लिया जाए, तो यह प्रवृत्ति रुक सकती है।

प्रशासन को इन संगीन मामलों में लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। सेल्फी के लापरवाही के मामले थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। कैसी विडंबना है कि लोग खुद की घोर लापरवाहियों के कारण बेमौत मर रहे हैं। लाशों के अंबार लग रहे हैं। बेखौफ होकर लोग जोखिम ले रहे हैं। पर्यटकों पर 'हम नहीं सुधरेंगे' का लेबल लगा हुआ है। यह कहावत बिगड़ैल पर्यटकों पर सटीक बैठती है कि इतने हादसों के बाद भी समझ नहीं आ रही है। 2020 व 2022 में भी काफी हादसे हुए हैं। 2023 में भी यह संख्या घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। आंकड़ों के अनुसार तमिलनाडू में चलती रेल के सामने सेल्फी लेते समय मौत हो गई थी। 19 जून 2021 को फिरोजाबाद में एक दिव्यांग सेल्फी लेते समय पटरी पर गिर गया, तब उसका दोस्त उसे बचाने आया और एकदम से रेल आ गई और दोनों की दर्दनाक मौत हो गई। 16 अक्तूबर 2019 को कुल्लू की धार्मिक नगरी मणिकर्ण में पार्वती नदी के किनारे सेल्फी ले रही दो पर्यटक युवतियां अचानक नदी में बह गई थीं। एक को निकाल लिया गया था, जबकि दूसरी बह गई। सेल्फी लेते समय पांव फिसलने से यह हादसा पेश आया था। ये युवतियां नदी किनारे एक पत्थर पर सेल्फी ले रही थी। ये युवतियां असम व दार्जिलिंग की रहने वाली थी। पर्यटक मनमानी करते हैं। 6 अक्तूबर 2019 को एक मामला तमिलनाडू के मरमपटी के पांबारु बांध में घटित हुआ था जहां सेल्फी लेते समय एक ही परिवार के चार लोगों की पांबारु बांध में गिरने से दर्दनाक मौत हो गई थी। एक को बचा लिया गया था। परिवार के सब लोग पानी में बह गए थे। केवल मात्र परिवार का एक सदस्य ही बच पाया था। मृतकों में नवविवाहित युगल व उनके सगे संबंधी थे।

देश में 2017 में 98 लोग सेल्फी लेते समय मारे गए। 2011 से 2018 तक 259 लोग मारे गए थे। विदेशी पर्यटकों की मौतें ज्यादा हो रही हैं। कुल्लू-मनाली में सैंकड़ों ऐसे मामले घटित हो चुके हैं। उसके बाद भी इन हादसों में कमी नहीं आ रही है। वर्ष 2018 में भी एक ऐसी ही घटना कुल्लू में घटित हुई थी। मणिकर्ण घाटी में पार्वती नदी के किनारे दिल्ली का एक पर्यटक सेल्फी लेते समय नदी में गिर गया था और पानी के तेज बहाव में बह गया था। उसकी लाश नहीं मिल पाई थी। समझ नहीं आता कि लोग पिछले घटित हादसों से सबक क्यों नहीं लेते। गत वर्ष भी हिमाचल प्रदेश में सेल्फी के चक्कर में एक छात्रा को जान से हाथ धोना पड़ा था तथा दूसरी को बचा लिया गया था। ये दोनों छात्राएं शिमला के सुन्नी क्षेत्र में कोलडैम के समीप सेल्फी ले रही थीं कि अचानक एक छात्रा का पांव फिसला और वह डूब गई। दूसरी छात्रा उसे बचाते समय डूबने लगी, मगर बचाव दल के सदस्यों ने उसे बचा लिया था। एक जुलाई 2019 को उत्तराखंड के पिथौरागढ़ में परिवार के साथ पिकनिक पर गए 13 साल के एक बच्चे की सेल्फी के दौरान डैम में गिरने से मौत हो गई थी। बच्चे को बचाने के लिए उसकी मां डैम में कूद गई, मगर जब वह डूबने लगी तो वहां मौजूद लोगों ने उसको बचा लिया, पर उसका बेटा डूब गया।

मध्यप्रदेश में भी झरने के पास सेल्फी ले रहे एक छात्र की डूबने से मौत हो गई थी। गोताखोर जान जोखिम में डालकर लोगों को बचा रहे हैं। सेल्फी के शौकीन खुद तो मर ही रहे हैं, साथ ही दूसरों को भी मार रहे हैं। ऐसे दर्दनाक हादसे थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। इसे प्रशासन की लापरवाही की संज्ञा दी जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। पिछले महीने चलती ट्रेन के साथ सेल्फी लेने के चक्कर में बंगलुरु के पास तीन युवाओं की दर्दनाक मौत हो गई थी। यह हादसा बंगलुरु से करीब तीस किलोमीटर दूर बिदादी के पास हुआ था जहां तीन लडक़े सेल्फी लेने के चक्कर में चलती ट्रेन की चपेट में आ गए थे और बेमौत मारे गए थे। इनकी उम्र अभी 16 से 18 साल के बीच थी। कुछ लोगों ने इन युवाओं को तस्वीरें खींचते देखा था। इनमें दो युवा कालेज के छात्र थे और एक ने पढ़ाई छोड़ दी थी। कुछ समय पहले वर्धा में नदी में विसर्जन के समय गणेश की मूर्ति के साथ सेल्फी लेने के चक्कर में तीन छात्रों की डूबकर मौत हो गई थी। अब इसे लापरवाही कहें या कुछ और, यह अहम सवाल है कि अपनी ही लापरवाहियों के कारण लोग डूबते जा रहे हैं। देश में घटित हो रहे ऐसे हादसों के लिए प्रशासन व पुलिस भी जिम्मेवार हैं। साथ ही लोगों को भी अब बढ़ते हादसों से सीख लेनी होगी, तभी ऐसे हादसों पर लगाम लगाई जा सकती है।

नरेंद्र भारती

ठगनी वीरों के लिए खुला आमंत्रण

अपने अपने स्तर के ठग छवि वाले सुडौल, भ्रष्ट माननीय, सम्मानीय सज्जनों को सूचित करते हुए मत पूछो कितनी प्रसन्नता हो रही है कि हमारी पार्टी आगामी चुनाव के मद्देनजर अपनी पार्टी में आकर्षक ठग छवि वाले सज्जनों का करंट लॉग शीघ्र भरने जा रही है। हे हमारे समाज के गणमान्य ठग छवि वालो! कोई जाने या न, पर हम यह अच्छी तरह जानते हैं कि अपने देश में किसी भी तरह के चुनाव में मतदाताओं की जरूरत हो या न, इवीएम की जरूरत हो या न, चुनाव कराने वाले कर्मचारियों की जरूरत हो या न, पर ठग छवि वाले मनमोहकों की सख्त जरूरत होती है। ठग छवि वाले सज्जनों के हाथों में ही संविधान सुरक्षित है। वे संविधान की क्या रक्षा करेंगे जो अपने आप को ही दिन के बारह बजे भी सुरक्षित महसूस नहीं करते। आपके बिना लोकतंत्र बिल्कुल नहीं चल सकता। आपके सहयोग के बिना कोई भी चुनाव निष्पक्ष ढंग से संपन्न नहीं हो सकता। कोई भी पार्टी ठग वीरों के बिना कहीं से भी चुनाव जीतना दूर, लड़ भी नहीं सकती। ठग छवि रहित चेहरा अपने विरुद्ध अपना ही चुनाव जीत कर बताए तो मानूं। जिस तरह कोई भी परिवार अपने किसी ठग छवि वाले सदस्य के बिना मुहल्ले में शांति से नहीं रह सकता, उसी तरह कोई भी राजनीतिक पार्टी ठग छवि वालों के बिना दूसरे दल के सामने तो छोड़िए, उसकी पीठ के पीछे तक पल भर भी नहीं टिक सकती। असल में हम आप जैसे सुप्रतिष्ठित माननीयों, सम्माननीयों के पद इसलिए भी भर रहे हैं कि उनकी पार्टी में हमारी पार्टी से अधिक ठग छवि के देशभक्त हैं।

इसलिए न चाहते हुए भी अपने समय की राजनीति की नब्ज को पहचानते हुए अपनी पार्टी का सौ के आसपास ठगीकरण करना हमारी विवशता है। हम नहीं चाहते हमारी पार्टी ठग छवि वालों को लेकर इनसे उनसे एक कदम भी पीछे रहे। हम नहीं चाहते आपकी कमी के बिना हम जीता जिताया चुनाव हार जाएं। भगवान भी जानते हैं कि आपका योगदान चुनाव लडने तक ही सीमित नहीं होता, आपकी भूमिका उसके बाद भी अहम होती है। अबके जीत से लेकर सरकार बनाए बचाए रखने तक हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते। बरसों से विपक्ष में बैठे बैठे अब थक चुके हैं। सरकार बना कुर्सी पर इतराने मस्तियाने को अब हमारा दिमाग भी मचल रहा है। अतः हमने तय किया है कि जो उनकी पार्टी में ठग छवि वाले पचास प्रतिशत हैं तो हम अपनी पार्टी में ठगनी छवि वाले माननीय नब्बे प्रतिशत से अधिक करके रहेंगे। हे हमारे ठगनी वीरो! ! यह खुल्लमखुल्ला सच है कि लोकतंत्र को मजबूत करने में जितना योगदान आपका रहा है उतना किसी और का नहीं। शरीफ आदमी लोकतंत्र को क्या खाक बचाएगा? वह तो अपने तक को नहीं बचा पाता। हर रोज कोई न कोई शिकायत लिए पुलिस स्टेशन में जा वहां से धकियाया जाता है। सच पूछो तो शरीफों को क्या राजनीति से काम! उन शरीफों को जिनको घर की देहरी से बाहर तो छोड़िए, उनके घर तक में कोई नहीं पूछता तो भला राजनीतिक पार्टी में उनको कौन पूछेगा क्यों पूछेगा? लोकतंत्र में चुनाव शरीफों के दम पर नहीं, आप जैसे साहसियों के दम पर ही प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष जीता जाता रहा है।

जिस पार्टी में आप जैसे नहीं होते वह पार्टी पचासियों देशभक्तों की पार्टी होने के बाद भी चुनाव में औंधे मुंह जा गिरती है। कोई भी पार्टी शरीफों से नहीं चलना तो दूर, रेंगा तक नहीं करती। शरीफ आज की दाव पेंच वाली दुनिया में जो खुद ही चल लें तो गनीमत समझें। जिस पार्टी में शरीफ और ईमानदार होते हैं, वह पार्टी चौथे दिन रेत की मु_ी की तरह बिखर जाया करती है। पार्टी को एकजुट बांधकर कोई रखते हैं तो बस आप जैसे जुझारू ही। हे लोकप्रिय ठग छवि वालो। कोई माने या न, पर यह सोलह आन्ने सच है कि लोकतंत्र के विकास में आपका योगदान अतुलनीय है।

फेस्टिवल सीजन और खरीफ फसल की बुवाई के चलते अक्टूबर में बढ़ी पेट्रोल-डीजल की खपत

अक्टूबर महीने में पेट्रोल–डीजल की खपत में बढ़ोतरी हुई है। इसकी वजह फेस्टिव सीजन औक कृषि गतिविधियों में हुई बढ़त को माना जा रहा है। पेट्रोल–डीजल के साथ एटीएफ की खपत में भी वृद्धि हुई है। आपको बता दें कि पिछले महीने अक्टूबर में रसोई गैस एलपीजी की बिक्री सालाना आधार पर 5.3 फीसदी बढ़कर 2.49 मिलियन टन रही।

नई दिल्ली। हर महीने पेट्रोल-डीजल की खपत के आंकड़े जारी होते हैं। फेस्टिव सीजन के शुरू होने के बाद पेट्रोल-डीजल की खपत में बढ़ोतरी हुई है। आज राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियों के आंकड़े जारी किये हैं। इन आंकड़ों से पता चलता है कि पेट्रोल-डीजल की खपत में बढ़ोतरी हुई है। इससे पहले छमाही में पेट्रोल-डीजल की खपत में गिरावट आई है। वहीं, पिछले साल इनकी खपत में बढ़ोतरी हुई थी। इस से कंपनियों के निश्चित वृद्धि दर में बढ़ोतरी दर्ज हुई है।

तीन सरकारी स्वामित्व वाले ईंधन खुदरा विक्रेताओं द्वारा पेट्रोल की बिक्री अक्टूबर में 3 प्रतिशत बढ़कर 2.87 मिलियन टन हो गई, जबकि डीजल की खपत 5 प्रतिशत बढ़कर 6.91 मिलियन टन हो गई। अक्टूबर की पहली छमाही में पेट्रोल की खपत साल-दर-साल 9 फीसदी और डीजल की बिक्री 3.2 फीसदी गिरी थी।

पिछले साल, दुर्गा पूजा/दशहरा के साथ-साथ दिवाली भी अक्टूबर में पड़ी थी। इस साल फेस्टिव सीजन खपत बढ़ी है।यह बढ़त अक्टूबर के दूसरे भाग में शुरू हुआ। इस साल अक्टूबर की पहली छमाही में पेट्रोल की खपत 1.17 मिलियन टन थी और दूसरी छमाही में यह 44 फीसदी अधिक थी।

डीजल की खपत में वृद्धि

देश में सबसे अधिक खपत वाला ईंधन डीजल है। यह मांग का लगभग दो-पांचवां हिस्सा। इस साल पहली छमाही में डीजल की खपत 2.99 मिलियन टन थी जबकि महीने के दूसरे पखवाड़े में बिक्री दर 3.91 मिलियन टन थी। इस साल सितंबर में यह बिक्री दर 5.82 मिलियन टन की तुलना में महीने-दर-माह बिक्री 18.7 प्रतिशत बढ़ी।

डीजल की बिक्री आमतौर पर मानसून के महीनों में गिर जाती है। इसकी वजह है कि बारिश के कारण कृषि सेक्टर में मांग कम हो जाती है जो सिंचाई, कटाई और परिवहन के लिए ईंधन का उपयोग करता है। इसके अलावा बारिश के मौसम में वाहनों की गति धीमी हो जाती है। आपको बता दें कि पिछले तीन महीनों में डीजल की खपत में गिरावट आई है। वहीं, मानसून खत्म होने के बाद डीजल की खपत महीने-दर-महीने बढ़ गई।

इस साल अप्रैल और मई में डीजल की खपत क्रमशः 6.7 प्रतिशत और 9.3 प्रतिशत बढ़ गई थी। देश में कृषि मांग के बढ़नऔर गर्मियों की गर्मी से बचने के लिए कारों ने एयर कंडीशनिंग का सहारा लिया था। मानसून आने के बाद जून के दूसरे पखवाड़े में इसकी खपत में कमी आनी शुरू हुई। अब एक बार फिर से इनकी खपत में वृद्धि देखने को मिली है।

पेट्रोल और एटीएफ की खपत में बढ़ोतरी

वहीं, अक्टूबर के दौरान पेट्रोल की खपत अक्टूबर 2021 की तुलना में 15.6 प्रतिशत अधिक और कोविड महामारी-पूर्व अक्टूबर 2019 की तुलना में 25.2 प्रतिशत अधिक थी। डीजल की खपत अक्टूबर 2021 की तुलना में 17.7 प्रतिशत और अक्टूबर 2019 की तुलना में 19.4 प्रतिशत अधिक थी।

हवाईअड्डों पर यात्री यातायात में निरंतर वृद्धि के साथ, अक्टूबर के दौरान जेट ईंधन की मांग पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 6.9 प्रतिशत बढ़कर 621,200 टन हो गई। यह अक्टूबर 2021 की तुलना में 38.3 प्रतिशत अधिक था, लेकिन प्री-कोविड अक्टूबर 2019 की तुलना में 5.9 प्रतिशत कम है। इस साल सितंबर 2023 में 603,600 टन की तुलना में महीने-दर-महीने जेट ईंधन की बिक्री लगभग 3 फीसदी अधिक थी।

एलपीजी की खपत में वृद्धि

पिछले महीने अक्टूबर में रसोई गैस एलपीजी की बिक्री सालाना आधार पर 5.3 फीसदी बढ़कर 2.49 मिलियन टन रही। एलपीजी की खपत अक्टूबर 2021 की तुलना में 2.8 प्रतिशत अधिक और प्री-कोविड अक्टूबर 2019 की तुलना में 11.7 प्रतिशत अधिक थी। मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों से पता चलता है कि सितंबर के दौरान एलपीजी की मांग 2.67 मिलियन टन एलपीजी खपत के मुकाबले 1.9 प्रतिशत गिर गई।

निचले स्तर पर पहुंची भारतीय करेंसी, डॉलर के मुकाबले रुपये में इतने पैसे की आई गिरावट

शेयर बाजार में जारी गिरावट ने भारतीय करेंसी को प्रभावित किया है। आज डॉलर के मुकाबले रुपया 9 पैसे की गिरावट के सात बंद हुआ है। इस गिरावट ने रुपया को निचले स्तर पर पहुंचा दिया है। वहीं विदेशी निवेशकों द्वारा हो रही बिकवाली ने भी रुपया को प्रभावित किया है।

नई दिल्ली। बुधवार के कारोबारी सत्र में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया 9 पैसे गिरकर बंद हुआ है। इस गिरावट के बाद रुपया सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया है। आज रुपया 83.33 पर अनंतिम बंद हुआ। डॉलर और विदेशी पूंजी बहिर्वाह ने रुपया की गिरावट को प्रभावित किया है। विदेशी मुद्रा व्यापारियों के अनुसार शेयर बाजार में नकारात्मक रुझान और मध्य पूर्व में भूराजनीतिक अनिश्चितता के बीच कच्चे तेल की ऊंची कीमतों ने निवेशकों की भावनाओं पर असर डाला। आज विदेशी मुद्रा बाजार में डॉलर के मुकाबले रुपया 83.26 पर खुला। इसके बाद अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया इंट्रा-डे में 83.35 के निचले स्तर और 83.26 के उच्चतम स्तर को छुआ। अंततः में भारतीय करेंसीअपने जीवनकाल के निचले स्तर 83.33 (अनंतिम) पर आ गई, जो इसके पिछले बंद भाव के मुकाबले 9 पैसे कम है। बीते दिन मंगलवार को डॉलर के मुकाबले रुपया 83.24 पर बंद हुआ। बीएनपी परिबास द्वारा शेयरखान के अनुसंधान विश्लेषक अनुज चौधरी ने कहा हमें उम्मीद है कि मध्य पूर्व में भूराजनीतिक अनिश्चितता के बीच मजबूत डॉलर के कारण रुपया थोड़ा नकारात्मक पूर्वाग्रह के साथ कारोबार करेगा। शेयर बाजार में कमजोर रुख का भी रुपये पर असर पड़ सकता है। वहीं, व्यापारी भारत से विनिर्माण पीएमआई और एडीपी गैर-कृषि रोजगार, जेओएलटीएस जॉब ओपनिंग और अमेरिका से आईएसएम विनिर्माण पीएमआई डेटा से संकेत ले सकते हैं। निवेशक आज रात एफओएमसी बैठक से पहले सतर्क रह सकते हैं। इस बीच, डॉलर सूचकांक, जो छह मुद्राओं की एक टोकरी के मुकाबले ग्रीनबैक की ताकत का अनुमान लगाता है, 0.20 प्रतिशत बढ़कर 106.87 पर कारोबार कर रहा था। वैश्विक तेल बेंचमार्क ब्रेंट क्रूड वायदा 1.34 प्रतिशत बढ़कर 86.16 अमेरिकी डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

शेयर बाजार में गिरावट

आज बीएसई सेंसेक्स 283.60 अंक या 0.44 प्रतिशत गिरकर 63,591.33 पर कारोबार कर रहा था, जबकि व्यापक एनएसई निफ्टी 90.45 अंक या 0.47 प्रतिशत गिरकर 18,989.15 पर आ गया। विदेशी मुद्रा व्यापारियों ने कहा कि भारत के निराशाजनक व्यापक आर्थिक आंकड़ों और एफआईआई के बहिर्वाह ने रुपये पर दबाव डाला। घरेलू व्यापक आर्थिक आंकड़ों पर, मौसमी रूप से समायोजित एसएंडपी ग्लोबल इंडिया मैन्युफैक्चरिंग परचेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (पीएमआई) सितंबर में 57.5 से गिरकर अक्टूबर में 55.5 पर आ गया, जो फरवरी के बाद से विस्तार की सबसे धीमी दर है। एक्सचेंज डेटा के अनुसार, विदेशी संस्थागत निवेशक मंगलवार को 696.02 करोड़ रुपये के शेयर बेचे।

इनसाइड

दूसरी तिमाही में अंबुजा सीमेंट का प्रॉफिट कई गुना बढ़ा, वहीं, रेवेन्यू में दर्ज हुई 4 फीसदी की बढ़त

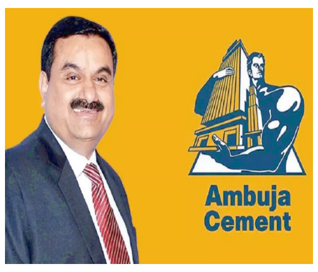

अदाणी ग्रुप्स की एक और कंपनी ने अपने तिमाही नतीजे जारी किया है। अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड द्वारा जारी नतीजों के अनुसार जुलाई–सितंबर 2023 की तिमाही में कंपनी का नेट प्रॉफिट कई गुना बढ़ा है। वहीं आज अंबुजा सीमेंट्स के शेयर लाल निशान पर बंद हुए हैं।

नई दिल्ली। आज बाजार बंद होने से पहले अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड (Ambuja Cements Ltd) ने चालू वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी तिमाही में कंपनी ने अपने वित्तीय प्रदर्शन के नतीजे जारी किये हैं। कंपनी ने बताया कि इस तिमाही उनका नेट प्रॉफिट कई गुना बढ़ गया है। दूसरी तिमाही में कंपनी का नेट प्रॉफिट 987.24 करोड़ रुपये था।

अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड के दूसरे तिमाही नतीजे

अंबुजा सीमेंट्स अब अदाणी ग्रुप्स का हिस्सा है। कंपनी द्वारा जारी नियामक फाइलिंग के अनुसारकंपनी ने एक साल पहले जुलाई-सितंबर तिमाही में 51.30 करोड़ रुपये का नेट प्रॉफिट कमाया था। नेट प्रॉफिट के साथ कंपनी का रेवेन्यू भी बढ़ा है। इस तिमाही कंपनी का रेवेन्यू 4.10 फीसदी बढ़कर 7,423.95 करोड़ रुपये हो गया। पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में कंपनी का राजस्व 7,131.39 करोड़ रुपये था। अंबुजा सीमेंट्स के अपने बयान में कहा कि लागत कंपनी ने अपेन बिजनेस और परिचालन पर ज्यादा ध्यान दिया। इसकी वजह से कंपनी का नेट प्रॉफिट में बढ़ोतरी हुई है। अंबुजा सीमेंट्स के तिमाही नतीजे में स्टेप-डाउन फर्म एसीसी लिमिटेड का वित्तीय प्रदर्शन भी शामिल है। इस नतीजे में लगभग 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है। अंबुजा सीमेंट्स का कुल खर्च 8.52 फीसदी कम होकर 6,564.28 करोड़ रुपये रहा, जो एक साल पहले 7,175.81 करोड़ रुपये था। वहीं सितंबर को खत्म तिमाही में कंपनी का नेट रेवेन्यू 9.1 फीसदी बढ़कर 7,900 करोड़ रुपये हो गया। अंबुजा सीमेंट्स का नेट प्रॉफिट जुलाई-सितंबर तिमाही में चार गुना बढ़कर 643.84 करोड़ रुपये हो गया, जो एक साल पहले की तिमाही में 138.91 करोड़ रुपये था। कंपनी का स्टैंडअलोन राजस्व 8 प्रतिशत बढ़कर 3,969.79 करोड़ रुपये हो गया, जो पहले 3,675.61 करोड़ रुपये था। आज अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड के शेयर बुधवार को बीएसई पर 19.80 अंक की गिरावट के साथ 404.65 रुपये पर बंद हुआ।

फेस्टिव सीजन में सोना-चांदी की कीमतों में आई गिरावट, जानिए आपके शहर में क्या हैं दाम

फेस्टिव सीजन का दौर शुरू हो गया है। इस फेस्टिव सीजन कई लोग गोल्ड और सिल्वर खरीदना काफी शुभ मानते हैं। ऐसे में अगर आप भी गोल्ड या सिल्वर खरीदने की प्लानिंग कर रहे हैं तो आपको जरूर चेक करना चाहिए कि आपके शहर में सोने–चांदी का भाव क्या है। दिल्ली में 24 कैरेट 10 ग्राम सोना 62030 रुपये है।

नई दिल्ली। फेस्टिव सीजन पर सोना-चांदी खरीदने की तैयारी कर रहे हैं तो आपको बता दें कि सोने-चांदी की कीमतों में उतार-चढ़ाव जारी है। आज सोने चांदी की कीमतों में नरमी देखने को मिली है। जानिए, आपके शहर में सोने-चांदी की क्या कीमत है?

सोने की कीमत

बुधवार को वायदा कारोबार में सोने की कीमत 179 रुपये गिरकर 60,761 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गई। एचडीएफसी सिक्योरिटीज के अनुसार कमजोर वैश्विक संकेतों के बीच राष्ट्रीय राजधानी में बुधवार को सोने की कीमत 350 रुपये घटकर 61,700 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गई। पिछले कारोबार में सोने की कीमत 62,050 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुई थी।

एचडीएफसी सिक्योरिटीज में कमोडिटी के वरिष्ठ विश्लेषक सौमिल गांधी ने कहा कि सुरक्षित मांग में गिरावट के कारण नए महीने की शुरुआत सोने की गिरावट के साथ हुई है। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोना 1,978 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहे थे।

चांदी में आई नरमी

बुधवार को चांदी वायदा 703 रुपये गिरकर 70,966 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में, दिसंबर डिलीवरी के लिए चांदी अनुबंध 703 रुपये या 0.98 प्रतिशत की गिरावट के साथ 70,966 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गया, जिसमें 17,466 लॉट का कारोबार हुआ।

चांदी भी 1,200 रुपये टूटकर 74,300 रुपये प्रति किलोग्राम पर आ गई। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में चांदी 22.55 अमेरिकी डॉलर प्रति औंस पर कारोबार कर रहे थे।

क्या है आपके शहर में गोल्ड की कीमत

गुड रिटर्न के मुताबिक 24 कैरेट सोने के भाव-

दिल्ली में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 62,030 रुपये है।

मुंबई में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 61,530 रुपये है।

कोलकाता में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 61,530 रुपये है।

चैन्नई में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 62,030 रुपये है।

बेंगलुरु में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 61,530 रुपये है।

हैदराबाद में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 61,530 रुपये है।

चंडीगढ़ में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 61,680 रुपये है।

जयपुर में 24 कैरेट, 10 ग्राम सोना 61,680 रुपये है।

पटना में 24 कैरेट के 10 ग्राम सोने का दाम 61,580 रुपये है।

लखनऊ में 24 कैरेट 10 ग्राम सोने का रेट 61,580 रुपये है।

अक्टूबर में जीएसटी कलेक्शन 13 प्रतिशत बढ़ा, सरकार ने जुटाए 1.72 लाख करोड़ रुपये

वित्त मंत्रालय द्वारा हर महीने जीएसटी संग्रह के आंकड़े जारी करती है। मंत्रालय ने बुधवार को यानी की आज अक्टूबर महीने के जीएसटी संग्रह दूसरा सबसे आंकड़ा है। अक्टूबर में 1.72 लाख करोड़ रुपये का जीएसटी संग्रह हुआ है। मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि साल दर साल में जीएसटी संग्रह में 13 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली है।

नई दिल्ली। वित्त मंत्रालय हर महीने मासिक जीएसटी संग्रह के आंकड़े जारी करते हैं। इस आंकड़े से पता चल जाता है कि हर महीने कितना जीएसटी संग्रह हो पाता है। दरअसल, सरकार ने टैक्स चोरी को रोकने के लिए जीएटी शुरू की थी। अब लोगों को जीएसटी का भुगतान करने के लिए सरकार कई अभियान भी चला रही है।

वित्त मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर में जीएसटी संग्रह 1.72 लाख करोड़ रुपये रहा। यह अब तक का दूसरा सबसे बड़ा आंकड़ा है। यह संग्रह पिछले साल अक्टूबर 2022 में कलेक्ट किए गए 1.52 लाख करोड़ रुपये से 13 फीसदी अधिक है।

अक्टूबर में सबसे ज्यादा हुआ जीएसटी कलेक्शन

वित्त मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अक्टूबर 2023 के लिए जीएसटी राजस्व संग्रह अप्रैल 2023 के बाद दूसरा सबसे बड़ा, 1.72 लाख करोड़ रुपये है। यह साल-दर-साल 13 फीसदी तक की वृद्धि को दिखाता है।

वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) से अब तक का सबसे अधिक राजस्व 1.87 लाख करोड़ रुपये अप्रैल 2023 में दर्ज किया गया था। वित्त वर्ष 2023-24 में औसत सकल मासिक जीएसटी संग्रह अब 1.66 लाख करोड़ रुपये है, जो एक साल पहले की अवधि की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक है।

देश में लगातार बढ़ रहा है पॉवर कंस्ट्रक्शन, अक्टूबर में लगभग 22 फीसदी बढ़ी बिजली की खपत

बिजली मंत्रालय द्वारा बिजली की खपत के आंकड़े जारी होते हैं। मंत्रालय ने अक्टूबर महीने के बिजली खपत के आंकड़े जारी किये हैं। इन आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर महीने में बिजली खपत लगभग 22 फीसदी बढ़ गई है। इसकी वजह फेस्टिव सीजन और आर्थिक गतिविधियों में आई तेजी तो माना जा रहा है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश में बिजली की खपत में लगातार बढ़ोतरी देखने को मिली है। सरकार द्वारा हर महीने बिजली खपत के आंकड़े भेजे जाते हैं। सरकार द्वारा जारी ताजा आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर महीने में बिजली की खपत में करीब 22 फीसदी की बढ़ोतरी देखने को मिली है। इसकी वजह फेस्टिव सीजन के साथ आर्थिक गतिविधियों को जाता है।

अक्टूबर में कितनी हुई बिजली खपत

सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार अक्टूबर महीने में बिजली की खपत 138.94 बिलियन यूनिट (बीयू) हो गई। पिछले साल इसी महीने में बिजली की खपत 113.94 बीयू थी, जो अक्टूबर 2021 में दर्ज 112.79 बिलियन यूनिट से अधिक है।

एक दिन में सबसे अधिक आपूर्ति अक्टूबर में बढ़कर 221.62 गीगावॉट हो गई। जो पिछले साल अक्टूबर 2022 में अधिकतम बिजली आपूर्ति 186.90 गीगावॉट और अक्टूबर 2021 में 174.44 गीगावॉट थी। बिजली मंत्रालय ने अनुमान लगाया था कि गर्मियों के दौरान देश की बिजली की मांग 229 गीगावॉट तक पहुंच जाएगी। बेमौसम बारिश के कारण अप्रैल-जुलाई में मांग अनुमानित स्तर तक नहीं पहुंची।

हालांकि, सबसे अधिकतम आपूर्ति जून में 224.1 गीगावॉट की नई ऊंचाई को छू गई, लेकिन जुलाई में गिरकर 209.03 गीगावॉट पर आ गई। इस साल अगस्त में अधिकतम मांग 238.19 गीगावॉट तक पहुंच गई। इस साल सितंबर में यह 240.17 गीगावॉट थी। उद्योग विशेषज्ञों ने कहा कि बेमौसम बारिश के कारण इस साल मार्च, अप्रैल, मई और जून में बिजली की खपत प्रभावित हुई।

अगस्त और सितंबर में बढ़ी बिजली की खपत

मंत्रालय ने कहा कि अगस्त और सितंबर में बिजली की खपत बढ़ी। इसका मुख्य कारण आर्द्र मौसम और त्योहारी सीजन से पहले औद्योगिक गतिविधियों का बढ़ना भी है। अक्टूबर महीने में बिजली खपत में वृद्धि त्योहारों और बेहतर आर्थिक गतिविधियों के प्रभाव को दर्शाती है। पिछले महीने अक्टूबर में नवरात्रि, दुर्गा पूजा और दशहरा के त्यौहार थे। विशेषज्ञों का मानना है कि त्योहारों और आर्थिक गतिविधियों में सुधार के कारण आने वाले महीनों में बिजली की खपत में वृद्धि स्थिर रहेगी।

नरेंद्र मोदी के कार्य कुशल नेतृत्व में देश का इंफ्रास्ट्रक्चर नई बुलंदियों को छू रहा है

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली से अमृतसर सिर्फ 40 मिनट में, सिर्फ दृढ़ संकल्प और मोदी सोच का नतीजा

भारत में परिवहन क्षेत्र में नई टेक्नोलॉजी का आगमन होने जा रहा है जिसके शुरू हो जाने से प्रदुषण में कमी आएगी, सड़को पर वाहनों का दवाब भी कम होगा और सफ़र में बेहतरीन तेजी आएगी

भारत में इस नई टेक्नोलॉजी का आगमन ड्यूरेशन कंपनी टेक्नोलॉजी दिल्ली से अमृतसर के लिए हाई स्पीड स्काई हवाई बस लगाने की योजना बना रही हैं। इस हाई स्पीड स्काई हवाई बस के शुरू होते ही दिल्ली से अमृतसर पहुंचने मे केवल 40 मिनट लगेंगे।

इस टेक्नोलॉजी के भारत में आने से परिवहन क्षेत्र में अदभुत बदलाव के साथ तेज़ी भी देखने को मिलेगी और इसकी लागत मेट्रो से भी काफी कम है।

तीन रुपये की बिजली से 50 किमी दौड़ रही ई-बाइक, प्रदूषण भी नहीं

प्रदेश में कुल ई-वाहनों में से 77.75 फीसदी दोपहिया वाहन हैं। इस समय प्रदेश में करीब 2423 ई-वाहन पंजीकृत हैं, जिनमें से 1884 दोपहिया हैं।

शिमला। ऊना के कुलदीप सिंह पेशे से इलेक्ट्रीशियन हैं। रोजाना 40 से 50 किलोमीटर सफर करते हैं। चार महीने पहले पेट्रोल बाइक बेचकर उन्होंने डेढ़ लाख रुपये में ई-बाइक खरीदी। पेट्रोल बाइक में रोजाना 100 से 150 रुपये का तेल खर्च होता था। अब रोजाना 3 रुपये की बिजली में 50 किलोमीटर ई-बाइक दौड़ रही है। इलेक्ट्रिक बाइक लेने के बाद महीने में बिजली के बिल में महज 150 रुपये की बढ़ोतरी हुई, जो पहले एक दिन के पेट्रोल का खर्च था।

इससे दो लाभ हो रहे हैं। एक वायु प्रदूषण कम करने और ग्रीन एनर्जी के उपयोग को प्रोत्साहन देने की मुहिम का हिस्सा तो बने ही, साथ ही बड़ी बचत भी हो गई। हिमाचल प्रदेश में लोग ई-बाइक खरीदने में दिलचस्पी दिखा रहे हैं। प्रदेश में कुल ई-वाहनों में से 77.75 फीसदी दोपहिया वाहन हैं। इस समय प्रदेश में करीब 2423 ई-वाहन पंजीकृत हैं, जिनमें से 1884 दोपहिया हैं।

बसों की बात करें तो एचआरटीसी ही प्रदेश में ई-बसों का संचालन कर रहा है। निजी ऑपरेटरों ने अब तक एक भी ई-बस नहीं खरीदी है, जबकि प्रदेश सरकार इन पर 50 फीसदी अनुदान दे रही है। प्रदेश में 178 यात्री ई-रिक्शा, और 9 मालवाहक ई-रिक्शा, 43 ई-मैक्सी कैब और 30 ओमनी बसें पंजीकृत हैं। 9 ई-ऑटो (थ्री व्हीलर) भी चल रहे हैं।

राजधानी शिमला के न्यू शिमला में रहने वाले कारोबारी विकास गुप्ता ने इसी साल मार्च माह में तेरह लाख रुपये खर्च कर ई-कार खरीदी। पेट्रोल कार पर महीने का तेल का खर्च करीब 10 से 11 हजार रुपये हो जाता था। ई-कार पर ईंधन का कोई खर्चा नहीं है। घर पर बिजली बिल पहले 1200 आता था और अब 1400 आ रहा है।

प्रदेश में केवल चार्जिंग स्टेशन की कमी ही बड़ी समस्या है, जिसके कारण लंबी दूरी के लिए ई-कार इस्तेमाल करना मुश्किल रहता है। सरकार को हर पेट्रोप पंप पर चार्जिंग स्टेशन लगाना अनिवार्य कर देना चाहिए।

ई-वाहनों को प्रोत्साहन देने के लिए प्रदेश सरकार ने टोकन टैक्स माफ करने का निर्णय लिया है। वाहन की कीमत का 6 फीसदी बतौर टोकन टैक्स वसूला जाता है, जो ई-वाहन खरीदने पर नहीं वसूला जा रहा। इसके अलावा 10 फीसदी सेस भी माफ किया गया है। 10 लाख की कार पर 60 हजार रुपये टोकन टैक्स और 6 हजार रुपये सेस यानी 66,000 रुपये की सीधी छूट दी गई है।

- आशीष कुमार कोहली, अतिरिक्त आयुक्त, परिवहन

वेतन लेने और आरबीआई में दो हजार रुपये के नोट बदलने के बाद ईडी की टीम पहुंची और जांच शुरू कर

मनोरंजन सासमल, ओड़िशा

भुबनेस्वर : भुबनेस्वर् भारतीय रिजर्व बैंक में वेतन के बदले दो हजार के नोट बदलने की घटना के बाद प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कार्रवाई शुरू कर दी है। पिछले कुछ दिनों से यह घटना रोजाना देखने को मिल रही है. मीडिया में खबर प्रसारित होने के बाद बुधवार को ओडिशा आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) पहुंची और ईडी की टीम ने जांच शुरू की.घटना के बारे में ईओडब्ल्यू अधिकारी ने कहा, 'हम इसकी जांच कर रहे हैं कि इतने सारे लोग अचानक पैसे बदलवाने क्यों आ जाते हैं.' पुष्टि करने के बाद पता चलेगा कि पूरा मामला क्या है.' वहीं, हमारे नियम के मुताबिक आरबीआई अधिकारी 10 नोट बदल सकता है। इससे अधिक राशि खाते में जमा की जा सकती है. 2 हजार रुपए का लीगल टेंडर अभी भी उपलब्ध है। हम देखते हैं कि प्रतिदिन लगभग 700 लोग आते हैं। पिछले सात दिनों में करीब डेढ़ करोड़ रुपये बदले गए हैं।

गौरतलब है कि कल नोट बदलने के लिए लोगों की लंबी कतार लगने के बाद संदेह पैदा हो गया था क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति 2000 रुपये बदलने के लिए आया था। जब मीडियाकर्मियों से सवाल किया गया तो उनमें से कुछ ने कहा कि उन्हें कतार में खड़े होकर नोट बदलने के लिए 2000-300 रुपये मिल रहे हैं. हालांकि, वे पैसे देने वाले व्यक्ति की पहचान उजागर नहीं करना चाहते थे।

हालांकि, चूंकि बैंकों में 2000 रुपये के नोट जमा करने और बदलने की आखिरी तारीख 7 अक्टूबर है, इसलिए आरोप है कि काले धन को सफेद करने की कोशिश की जा रही है।

पैंशनर अंग्रेजी वर्णमाला के अपने नाम के अक्षर अनुसार आज से जमा करवा सकते है जीवन प्रमाण पत्र

अश्विनी वालिया

नई दिल्ली। कुरुक्षेत्र खजाना अधिकारी राजीव शर्मा ने कहा कि कुरुक्षेत्र जिला के खजाना व उपखजाना कार्यालयों से पेंशन प्राप्त कर रहे पैंशनधारक (जो ई-पेंशन प्रणाली के माध्यम से पेंशन प्राप्त कर रहे सभी पेंशनधारक) जो कि वर्तमान में खजाना कार्यालय कुरुक्षेत्र व इसके अधीन उप खजाना कार्यालयों से पेंशन प्राप्त कर रहे है, अंग्रेजी वर्णमाला में अपने नाम के पहले अक्षर के अनुसार खजाना कार्यालय में आकर अपने जीवन प्रमाण पत्र जमा करवा सकते हैं, ताकि नवंबर 2023 माह की पैंशन जो कि दिसंबर 2023 माह में भुगतान की जानी है का सही समय पर भुगतान किया जा सके।

खजाना अधिकारी राजीव शर्मा ने जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि सभी पैंशनर अपने नाम के पहले अक्षर के अनुसार निर्धारित तिथि को खजाना कार्यालय मे आकर अपने जीवन प्रमाण पत्र जमा करवा सकते है। पैंशनर अपने साथ अपना आधार कार्ड, पीपीओ नंबर एवं अपना मोबाईल साथ में लेकर आए। उन्होंने बताया कि अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर ए से ई तक के अक्षर से शुरु होने वाले नाम के पैंशनर 2 नवंबर से 11 नवंबर 2023 तक खजाना कार्यालय में आकर अपने जीवन प्रमाण पत्र जमा करवा सकते है। इसी प्रकार एफ से जे अक्षर वाले पैंशनर 14 नवंबर से 16 नवंबर, के से ओ अक्षर वाले पैंशनर 17 नवंबर से 21 नवंबर तथा पी से जेड अक्षर वाले पैंशनर 22 नवंबर से 25 नवंबर तक कार्यालय कार्य दिवसों में खजाना कार्यालय में आकर अपने जीवन प्रमाण पत्र जमा करवा सकते है।

कोट खालसा वार्ड नंबर 74 में हुई अहम बैठक, जल्द ही सैकड़ों और AAP कार्यकर्ता होंगे कांग्रेस में शामिल! मैं कांग्रेस में घर वापस आ गया हूं। मैं दो साल तक एसओआई का अध्यक्ष रहा हूं : संदीप सिंह

अमृतसर (साहिल बेरी) पंजाब में होने वाले नगर निगम चुनावों को लेकर अब एस. गतिविधियां तेज होती दिख रही हैं और नगर निगम चुनावों से पहले फ़ीड में बड़े बदलाव भी देखे जा रहे हैं। 12. मामला अमृतसर के कोट खालसा के वार्ड नंबर 74 का है, जहां सैकड़ों कार्यकर्ता आम आदमी पार्टी और अकाली दल छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए, जिसमें एसओआई अध्यक्ष संदीप सिंह भी अकाली दल की सीट छोड़कर कांग्रेस में शामिल हो गए. कांग्रेस. हुआ जिसके चलते आज कांग्रेस ने उनके निवास स्थान पर एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की और उस प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्होंने पंजाब में आम आदमी पार्टी के धक्के के बारे में बोलते हुए कहा कि लोग आम आदमी पार्टी और अकाली दल से काफी नाराज हैं, जिसके चलते . जिसके लिए लोग अब कांग्रेस से जुड़ रहे हैं. शामिल होने लगे हैं आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि पहले भी हमने आम आदमी पार्टी और अकाली दल के 100 से 150 कार्यकर्ताओं को कांग्रेस में शामिल किया था. और हम भविष्य में कई और अकाली दल और आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी में शामिल करेंगे। पंजाब में होने वाले नगर निगम चुनावों को लेकर सरगर्मियां लगातार तेज हो रही हैं और जो लोग इन नगर निगम चुनावों के दौरान अपनी मातृभाषा वाली पार्टियों को छोड़कर दूसरी पार्टियों में शामिल हो गए थे, वे अब फिर से पार्टियों में शामिल हो रहे हैं।

इसके साथ ही एसओआई के अध्यक्ष भी अकाली दल छोड़कर कांग्रेस का हाथ थामते नजर आए, जिसके बाद आज उन्होंने अपने आवास पर प्रेस कॉन्फ्रेंस की और इस प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान आम आदमी पार्टी के दबाव पर बात की. पार्टी पंजाब में उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी और लोग अकाली दल से काफी नाराज हैं, जिसके चलते लोग कांग्रेस में शामिल होने लगे हैं. उन्होंने आगे कहा कि हमने कुछ दिन पहले आम आदमी पार्टी और अकाली दल के 100 से 150 कार्यकर्ताओं की हत्या कर दी है. उन्हें कांग्रेस में शामिल कर लिया गया. और हम निकट भविष्य में कई और अकाली दल और आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं को अपनी पार्टी में शामिल करेंगे। जो लोग अपनी मातृ पार्टियों को छोड़कर दूसरी पार्टियों में शामिल हो गए थे, वे अब फिर से पार्टियों में शामिल हो रहे हैं। एक ही समय पर एसओआई के अध्यक्ष भी अकाली दल की मूल सदस्यता से इस्तीफा देकर कांग्रेस में शामिल हो गए हैं और उनके साथ शामिल होने के लिए अमृतसर से सांसद सरदार गुरजीत सिंह औजला भी पहुंचे. वहां पत्रकारों से बात करते हुए, संदीप ने कहा कि वह पिछले 40 वर्षों से कांग्रेस का समर्थन कर रहे हैं और उन्होंने दो साल तक अकाली दल के साथ एसओए की अध्यक्षता की और कहा कि चूंकि उनका परिवार कांग्रेस से है, इसलिए उन्होंने कहा कि वे इसमें शामिल हो गए हैं। कांग्रेस अपने क्षेत्र में बढ़ती नशे की लत को खत्म करेगी और वे जल्द ही अपने क्षेत्र में इस कोड को खत्म करेंगे। वहीं पत्रकारों से बातचीत में कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं का कहना है कि पंजाब में आम आदमी पार्टी के प्रति बढ़ते गुस्से को देखते हुए कई बड़े चेहरे कांग्रेस में शामिल होने लगे हैं और ये जिंदा है. उदाहरण के तौर पर आज जब दो 150 परिवार कांग्रेस में शामिल हुए हैं तो उन्होंने कहा कि हम इन सभी परिवारों का स्वागत करते हैं और भविष्य में और भी कई परिवार होंगे जो कांग्रेस में शामिल होंगे और कांग्रेस की सीटें जीतेंगे. हम इसे कांग्रेस की झोली में डाल देंगे इस मौके पर सरदार रतन सिंह, संधू संदीप सिंह संधू, सुरजीत सिंह संधू, पन्ना लाल मनमन, सरबजीत सिंह औजला, अशोक सैनी, बागा सिंह, काबल सिंह, सुखदेव सिंह सुक्खा, मनजीत सिंह बाबी। पहलवान, बख्शीश सिंह धन्ना, अशोक सैनी, करण चावला। ,अजय कबाड़ी, दयाल सिंह सुखदेव सिंह सुक्खा, गुरमेज सिंह मंजीत सिंह बब्बी पहलवान, अन्य शख्सियतें मौजूद थीं।

पांडियन को मुख्यमंत्री बनाने के लिए बीजे-बीजेपी गठबंधन करेगी: कांग्रेस नेता

मनोरंजन सासमल, ओड़िशा

भुबनेस्वरः कांग्रेस के एक नेता ने राज्य की दो मुख्य विपक्षी पार्टियों बीजेडी और बीजेपी के अंदरूनी रिश्ते को ध्यान में रखते हुए बड़ा दावा किया है. उन्होंने कहा, दोनों पार्टियों ने हाथ मिलाया है, उनका लक्ष्य वीके पांडियन को मुख्यमंत्री बनाना है. इसके लिए दोनों दलों ने गहन तैयारी शुरू कर दी है.

बलांगीर जिला कांग्रेस अध्यक्ष फिलिप बेहरा ने कहा, ₹जब राज्य में कई प्रतिभाशाली आईएएस अधिकारी हैं, तो पांडियन को 5 और मेरे ओडिशा नवीन ओडिशा प्रोजेक्ट का अध्यक्ष क्यों बनाया गया ?₹ उन्होंने आगे आरोप लगाया कि बीजू जनता दल और भारतीय जनता पार्टी दोनों मिलकर पांडियन को मुख्यमंत्री बनाने की कोशिश कर रहे हैं.

उन्होंने कहा, वीआरएस लेने से पहले भी पांडियन सत्तारूढ़ बीजेजे के अध्यक्ष के रूप में काम कर रहे थे. स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद 5वें चेयरमैन के तौर पर शामिल होकर उन्होंने अपने इरादे साफ कर दिए हैं.इसके जवाब में बलांगीर बीजेएम के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक मोहंती ने कहा, "यह झूठा आरोप है." जब पांडियन बाबू के पास 5 सचिव थे तब उन्होंने ओडिशा के लोगों की सेवा की। नौकरी से रिटायर होने के बाद भी वह लोगों की सेवा कर रहे हैं. यहां तक कि मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने भी उन पर भरोसा जताया है. उन्होंने (पांडियन) बीजे में भी भाग नहीं लिया है। वे कैसे कह सकते हैं कि वह मुख्यमंत्री बनने जा रहे हैं।' बीजेजे नेता ने कहा कि शिकायत का कोई आधार नहीं है.

गौरतलब है कि 23 अक्टूबर को वीके पांडियन स्वेच्छा से आईएएस की नौकरी से सेवानिवृत्त हो गए थे। उनके वीआरएस अनुरोध को स्वीकार किए जाने के एक दिन बाद, पांडियन को 5t और नवीन ओडिशा अध्यक्ष के साथ कैबिनेट मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया। कुछ बुद्धिजीवियों के मुताबिक, वीआरएस लेने वाला यह सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी बीजे सुप्रीमो नवीन पटनायक का उत्तराधिकारी हो सकता है।

हिमाचल पथ परिवहन निगम कर्मचारियों को दो माह के एरियर सहित तनख्वाह जारी

एचआरटीसी ने कर्मचारियों की तनख्वाह एक तारीख को जारी कर दी है। बड़ी बात यह है कि इन कर्मचारियों को अप्रैल और मई का एरियर भी साथ दिया गया है।

शिमला। हिमाचल पथ परिवहन निगम (एचआरटीसी) ने कर्मचारियों की तनख्वाह एक तारीख को जारी कर दी है। बड़ी बात यह है कि इन कर्मचारियों को अप्रैल और मई का एरियर भी साथ दिया गया है। इससे पहले एचआरटीसी के कर्मचारी मासिक वेतन पहली तारीख को जारी करने को लेकर निगम प्रबंधन से गुहार लगाते रहे हैं। कोरोना के बाद यह पहली बार हुआ है कि कर्मचारियों को एक तारीख को वेतन दिया गया है। इससे एचआरटीसी में 12,000 कर्मचारी और 7,000 पेंशनरों को राहत मिली है। दिवाली से पहले वेतन और एरियर मिलने से कर्मचारियों में खुशी का माहौल है।

उल्लेखनीय है कि प्रबंध निदेशक परिवहन (एमडी) रोहन ठाकुर ने कहा था कि परिवहन निगम के कर्मचारियों को जब तक मासिक वेतन नहीं मिल जाता, तब तक वह भी वेतन नहीं लेंगे। वहीं, परिवहन संयुक्त समन्वय समिति के पदाधिकारी भी वेतन और कर्मचारियों की अन्य मांगों को लेकर उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री से मिलते रहे हैं। अग्निहोत्री ने भी कर्मचारियों की हर मांग पूरा करने का आश्वासन दिया था। उन्होंने अधिकारियों को अन्य विभागों की तर्ज पर एक तारीख को तनख्वाह जारी करने के निर्देश दिए थे। संयुक्त समन्वय समिति के सचिव खेमेंद्र गुप्ता ने बताया कि इस बार कर्मचारी दिवाली खुशी-खुशी मना सकेंगे। सरकार ने एरियर के साथ वेतन जारी किया है। अब कर्मचारियों को महंगाई भत्ते का इंतजार है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। Title Code : DELHIN28985. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023